सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
You Tube

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 70, नई दिल्ली । बुधवार, 21 मई 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन में विजेता कुछ अलग नहीं करते परंतु वह चीजों को ही अलग तरीके से करते हैं।

03 मनीष सिसोदिया की 31 मई तक बढी हिरासत
06 भारत में जनसंख्या असंतुलन की समस्या
08 सुप्रीम कोर्ट ने आर्टिकल 370 से जुड़े अपने आदेश की समीक्षा के लिए दायर याचिकाएं खारिज कीं

दिल्ली के ऑटो तीन पहिया वाहन मालिको को अपने पुराने वाहन की जगह नया वाहन लाने के लिए पुराने वाहन को सिर्फ स्क्रैप करवाना ही क्यों जरूरी ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा आटो तीन पहिया वाहन मालिको को परेशान करने के लिए आज भी परिवहन विभाग द्वारा सभी कार्यशैली आनलाइन उपलब्ध होने के बावजूद अपने नियम / कानून और ढंग से हस्तचालित कार्यशैली से लागू कर रखी है। आपकी जानकारी हेतु बता दें दिल्ली में अगर किसी व्यवसायिक परमिट की बाजार में मांग है या गुडविल उपल्ब्ध हो सकती है वह है सिर्फ आटो तीन पहिया व्यवसायिक वाहन परमिट। **शायद इसी को बनाए रखने के लिए ही आटो तीन पहिया शाखा के आला अधिकारी अपने नियमों और हस्तचालित कार्यशैली को ही यहां चालू रखने के पक्ष मे रहते हैं।** आप की जानकारी में एक और बात बता दें की अगर आप परिवहन विभाग से आरटीआई के माध्यम से दिल्ली के तीन पहिया वाहन के ड्रा में निकले परमिट होल्डर्स का नाम और उसके बाद की पूर्ण जानकारी आज के परमिट धारक तक मांग लेंगे तो दूध का दूध और पानी का पानी सबके सामने आ जाएगा। दिल्ली में चल चुकी या चल रही किसी भी व्यवसायिक श्रेणी के वाहन चलाने के लिए अगर ड्रा द्वारा जारी परमिट किया गया है तो वह परमिट नम्बर जो ड्रा होल्डर वाहन मालिक को जारी किया गया था वहीं कितनी बार वाहन बदला गया हो या परमिट धारक पर परमिट नम्बर वही मिलेगा, नही मिलेगा तो सिर्फ आटो तीन पहिया वाहन पर। **आख़िर किसी भी श्रेणी में परमिट नम्बर ना बदलने और सिर्फ आटो तीन पहिया के परमिट नम्बर को बार बार बदलने के पीछे क्या है कारण, बड़ा सवाल ?**

तीन पहिया आटो मालिक के द्वारा नया वाहन अपने परमिट पर लाने के लिए पुराना आटो तीन पहिया स्क्रैप करवाना क्यों जरूरी। तीन पहिया आटो वाहन के परमिट जारी करने के लिए सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया ने नम्बर (आज की तारीख में एक लाख) से बंदिश के आदेश पारित किए हुए हैं। यह बात सही है और सड़को पर उससे ज्यादा आटो तीन पहिया ना चले इसकी जवाबदारी परिवहन विभाग की बनती है पर उसके बाद भी तो दिल्ली की सड़को पर एक ही नम्बर के कई आटो एक ही समय पर दिल्ली की सड़को पर पकड़े जाते रहें हैं पर किसी की शिकायत पर, तो वह आटो तीन पहिया स्क्रैप होने के बाद भी कैसे उपल्ब्ध हो जाते हैं गलती करने वालो को, क्या इसकी जवाबदारी परिवहन विभाग की नही ?

नियम के अनुसार सड़क से पुराना आटो तीन पहिया वाहन हटने पर ही नया आटो **तीन पहिया वाहन लाने की इजाजत दी जानी है तो तीन पहिया आटो वाहन मालिक को यह छुट क्यों नहीं की या तो आटो स्क्रैप डीलर से स्क्रैप करवा लो या अपने पुराने आटो को अन्य किसी राज्य में एनओसी प्राप्त कर ले जाओ या बेच दो** एनओसी लेकर गया हुआ वाहन भी तो दिल्ली की सड़को पर नही आ सकता। इसका सिर्फ यह फायदा होगा की **ऑटो वाहन मालिक को स्क्रैप की कीमत से कुछ अधिक पैसा अपने पुराने वाहन का मिल जाएगा जो उसको नया वाहन खरीदने में मदद देगा।**

10 जून से दो महीने तक काम चलने के कारण सरिता विहार फ्लाईओवर जाने से पहले जाने ट्रैफिक एडवाइजरी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में मथुरा रोड पर सरिता विहार फ्लाईओवर पर मरम्मत का काम होने वाला है, जो की 10 जून से शुरू होगा, जिसके चलते 60 दिनों के लिए चार अलग-अलग चरणों में फ्लाईओवर के हिस्सा को बंद किया जाएगा। ट्रैफिक पुलिस के मुताबिक, पहले यह काम जून 2023 में ही होना था, लेकिन उस समय काम नहीं हो पाया। इसके बाद बीती 1 मई का समय तय किया गया था, लेकिन लोकसभा चुनाव की वजह से इसकी अनुमति नहीं दी गई। मथुरा रोड से रोजाना लाखों गाड़ियां दिल्ली से फरीदाबाद के बीच सफर करती है, व्यस्त समय पर यहां वाहनों का दबाव बहुत ज्यादा रहता है, इसकी वजह से मरम्मत कार्य चार चरणों में पूरा किया जाएगा। पूरी तरह से फ्लाईओवर पर बंद नहीं होगा। सिर्फ एक दिशा में ही फ्लाईओवर की आधी लेन बंद की जाएगी। जबकि आधी लेन पर गाड़ियां चालू रहेगी। सूत्रों के हवाले से कहा जा रहा है कि पहले चरण में आश्रम से फरीदाबाद जाने की दिशा में मरम्मत का काम शुरू किया जाएगा। दूसरे चरण में इसी दिशा के बचे हुए आधे फ्लाईओवर के मरम्मत होगी, फिर तीसरे और चौथे चरण में फरीदाबाद से आश्रम आने की दिशा में मरम्मत कार्य किया जाएगा। वैकल्पिक रास्तों की लिस्ट अभी तैयार की जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि लोगों को यहां जाम का सामना करना पड़ सकता है। खास तौर पर सरिता विहार, न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी, बदरपुर, कालिंदी कुंज, ओखला, फरीदाबाद आदि जगह आने जाने वालों को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। वाहन चालकों की सुविधा के लिए ट्रैफिक पुलिस द्वारा एडवाइजरी भी जारी की गई है।

हमारे देश के प्रिय युवाओं,

जैसे ही हम अपने देश की सड़कों पर चलते हैं, यह महत्वपूर्ण है कि हम लेन ड्राइविंग की बुनियादी नैतिकता को अपनाएं और धैर्य की कला विकसित करें। ये सिद्धांत केवल यातायात नियमों का पालन करने के बारे में नहीं हैं, बल्कि हमारी और हमारे आसपास के अन्य लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के बारे में हैं।

लेन अनुशासन सड़क सुरक्षा की आधारशिला है। अपनी लेन में रहने से यातायात का पूर्वानुमानित प्रवाह सुनिश्चित होता है, जिससे टकराव की संभावना कम हो जाती है। जब ड्राइवर बार-बार लेन बदलते हैं या लापरवाही से ओवरटेक करते हैं, तो वे भ्रम और संभावित खतरे पैदा करते हैं। यह आवेगपूर्ण व्यवहार अक्सर दुर्घटनाओं का कारण बनता है, जिससे न केवल खुद को बल्कि निर्दोष दर्शकों को भी नुकसान होता है।

इसके अलावा, बार-बार लेन बदलने की आदत के कारण जुर्माना और सजा भी हो सकती है। यातायात कानून हमारी सुरक्षा के लिए बनाए गए हैं, और उनका उल्लंघन करने पर परिणाम भुगतने पड़ते हैं। अपनी लेन पर कायम रहकर और धैर्यपूर्वक गाड़ी चलाकर, आप इन दंडों से बचते हैं और सभी के लिए एक सहज, सुरक्षित ड्राइविंग वातावरण में योगदान करते हैं।

धैर्य सुरक्षित ड्राइविंग का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। हमारी तेज़-तर्रार दुनिया में, गाड़ी चलाते समय अधीर हो जाना आसान है। हालाँकि, जल्दबाजी या आक्रामक ड्राइविंग से दुर्घटनाओं का खतरा ही बढ़ता है। थोड़ी देर रुककर यातायात के प्रवाह का सम्मान करने से अनगिनत दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। याद रखें, कुछ मिनट देर से पहुंचना बिल्कुल न पहुंचने से कहीं बेहतर है।

हमारे देश के युवा के रूप में, आपके पास सड़कों पर एक सकारात्मक उदाहरण स्थापित करने की शक्ति है। लेन अनुशासन का अभ्यास करके और धैर्य का प्रयोग करके, आप न केवल अपनी सुरक्षा करते हैं बल्कि सभी ड्राइवरों के बीच सुरक्षा और सम्मान की संस्कृति को भी बढ़ावा देते हैं।

आइए अपनी सड़कों को सभी के लिए सुरक्षित बनाने का संकल्प लें। ज़िम्मेदारी से गाड़ी चलाएँ, अपनी लेन में रहें और हमेशा जल्दबाजी की बजाय धैर्य को चुनें।

अपना ख्याल रखें, सुरक्षित ड्राइव करें

डॉ अंकुर शरण
roadsafetysquad@gmail.com

बस में सीट की पहले से बुकिंग, उबर को दिल्ली में बस चलाने के लिए लाइसेंस मिलने से क्या बदल जाएगा ?

परिवहन विशेष न्यूज

ऐप आधारित ऑनलाइन कैब बुकिंग सेवा देने वाली कंपनी उबर को दिल्ली परिवहन विभाग से सरकार की प्रीमियम बस योजना के तहत राष्ट्रीय राजधानी में बसें संचालित करने के लिए 'एग्रीगेटर' लाइसेंस प्राप्त हुआ है। 'एग्रीगेटर' से आशय कारोबारी मॉडल से है। यह एक नेटवर्क मॉडल होता है जिसके तहत सेवा प्रदाताओं और सेवा लेने वालों को एक मंच पर जोड़ा जाता है।

नई दिल्ली: लोकप्रिय कैब बुकिंग ऐप उबर को दिल्ली में बसें चलाने का लाइसेंस मिल गया है। यह दिल्ली सरकार की प्रीमियम बस योजना का हिस्सा है, जिसका मकसद शहर में बेहतर सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था प्रदान करना है। उबर को दिया गया लाइसेंस 'एग्रीगेटर' मॉडल पर आधारित है। इसका मतलब है कि उबर अपनी बसें नहीं चलाएगा, बल्कि यह विभिन्न बस ऑपरेटरों को अपने ऐप पर जोड़कर एक प्लेटफॉर्म प्रदान करेगा। यात्री उबर ऐप के जरिये से बसों में सीटों की बुकिंग और पेमेंट कर सकेंगे।

कंपनी ने बयान में कहा कि दिल्ली बस संचालन के लिए लाइसेंस देने वाला पहला राज्य बन गया है। वहीं, उबर दिल्ली प्रीमियम बस योजना के तहत लाइसेंस लेने वाली पहली 'एग्रीगेटर' बन गई है।

उबर शटल इंडिया के प्रमुख अमित देशपांडे ने कहा, 'एक सफल पायलट कार्यक्रम के बाद हम आधिकारिक तौर पर दिल्ली में बस की सुविधा शुरू करने से उत्साहित हैं। पायलट कार्यक्रम के दौरान हमने बसों की महत्वपूर्ण मांग देखी।'

ग्राहक उबर ऐप पर 'उबर शटल' विकल्प चुनकर अपने पसंदीदा रूट पर सीट की पहले से बुकिंग कर सकेंगे।

बयान के अनुसार, दैनिक आवागमन की जरूरतों के हिसाब से तैयार बस सेवा 'उबर शटल' की औपचारिक शुरुआत पायलट कार्यक्रम की सफलता के बाद हुई है।

बीते साल से बंगाल में सेवा शुरू

पिछले साल से पश्चिम बंगाल में इसका परिचालन किया जा रहा है। इस संबंध में कंपनी ने सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। इसमें कहा गया है कि यात्री उबर ऐप के माध्यम से एक सप्ताह पहले तक सीट की पहले से बुकिंग कर सकेंगे। बस की 'लाइव लोकेशन' और मार्ग को जानकारी प्राप्त सकेंगे और उसके आने के अपेक्षित समय को भी देख सकेंगे।

प्रत्येक शटल वाहन में 19 से 50 यात्रियों के बैठने की जगह होगी। उबर की तकनीक का उपयोग करके बस संचालन से जुड़े स्थानीय भागीदार इसका संचालन करेंगे।

कैसे होगा फायदा ?

इस योजना से कई फायदे होने की उम्मीद है:

यात्रियों के लिए बेहतर सुविधा: यात्रियों को एक ही ऐप पर विभिन्न बस ऑपरेटरों की बसों की जानकारी मिल सकेगी और वे आसानी से बुकिंग कर सकेंगे।

बसों में बेहतर सेवा: प्रतिस्पर्धा बढ़ने से बस ऑपरेटर बेहतर सेवाएं देने के लिए प्रेरित होंगे।

कम भीड़: बसों की संख्या बढ़ने से सड़कों पर भीड़भाड़ कम होगी।

क्या सड़को पर अनाधिकृत/अवैध तरीके से खड़े वाहनों से दिल्ली की सड़को को दिल्ली पुलिस, दिल्ली यातायात पुलिस, प्रवर्तन शाखा परिवहन विभाग मुक्त करा सकते है, बड़ा सवाल ? टोलवा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली के तमाम मुख्य बाजारों, हॉस्पिटल, स्कूल, कालोनी, भ्रमण स्थलों, धार्मिक स्थलो, न्यायालयों इत्यादि के पास सभी मुख्य सड़को पर बिना गिनती के अवैध पार्किंग में वाहनों को जनता कभी भी खड़ा देख सकती है। **ऐसा नहीं है कि इसकी जानकारी प्रशासन, परिवहन विभाग, दिल्ली यातायात पुलिस, दिल्ली पुलिस, एमसीडी, पीडब्ल्यूडी या सीपीडब्ल्यूडी, नगर पालिका या उनके मुखियो को नही है** पर उसके बावजूद यह आला अधिकारी कुछ नहीं कर सकते क्योंकी जनता को इन सभी स्थानों पर जाना और रुकना जरूरी है और इन स्थानों पर या तो पार्किंग स्थल है ही नही और है तो पार्किंग माफिया और सरकारी विभागों के अधिकारियों की मिली भगत से वहा पार्किंग के नाम पर लिया जाने वाला चार्ज इतना अधिक किया हुआ है की लोग सड़को पर ही अपने वाहन लगा कर जाना पसन्द करते हैं। सड़को पर खडे इन वाहनों के कारण वहा से अपने गंतव्य स्थान पर जाने वाले लोगों को कितनी परेशानी का सामना करना पड़ता हैं इससे सम्बन्धित विभाग के किसी आला अधिकारी को कोई फर्क नहीं पड़ता। **अब तो यहां तक देखने को मिलने लगा है की सड़को पर अवैध तरीके से वाहन लगाने वालो से भी सड़क पर वाहन लगाने के लिए पार्किंग चार्ज लेने वाले खड़े है** और बेफ्रिक होकर वाहन मालिकों से पार्किंग चार्ज वसूल रहे हैं और उन्हें सिर्फ पार्किंग चार्ज लेने से मतलब है इससे नही की सड़क पर खड़े इस वाहन के कारण सड़क में आवागमन में अन्य वाहनों को कितनी परेशानी हो रही है।

पश्चिम विहार में स्थित एक्शन बालाजी हॉस्पिटल के बाहर दोनो तरफ़ सड़क पर पार्किंग चार्ज लेने वालो की आप गिनती भी नही कर सकते हैं और साथ ही सड़क पर जाम भी 24 घण्टे देख सकते है, यहां के निवासी तक यहां से बाहर मुख्य सड़क पर जाने के लिए कितने परेशान होते है इसे समझने की जरूरत ना तो यातायात पुलिस को है, ना दिल्ली पुलिस को और एमसीडी को तो हो ही नहीं सकती क्योंकि सड़को पर अवैध पार्किंग के लिए मोटी रकम पार्किंग चार्ज के नाम पर वसूल रही हैं।

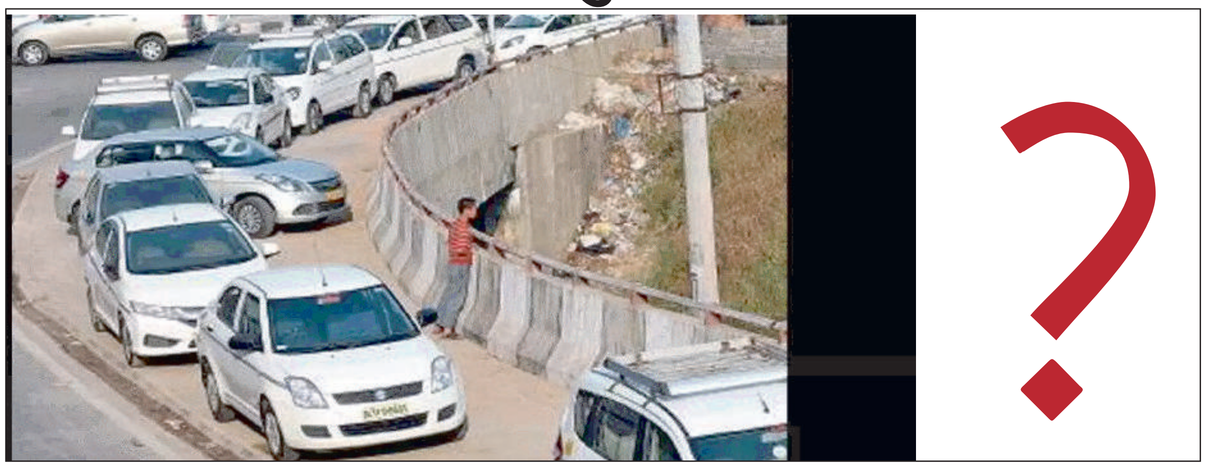

ऐसा ही हाल कड़कड़डूमा कोर्ट थाना फर्श बाजार, शाहदरा सर्कल के बीच में नजर आता है। यहां रोजाना कोर्ट के बाहर सड़को पर हजारों वाहन खड़े रहते हैं जोकि सड़क पर दोनों ओर से जाम लगा देते हैं। जिनकी वजह से जाम की स्थिति तो बनी ही रहती है और एंबुलेंस तक को निकलने का स्थान नही मिल पाता। पर यहां पर **ट्रैफिक पुलिस द्वारा अतिरिक्त स्टाफ तैनात किया जाता है और समय के अंतराल में क्रेन से भी वाहन हटाये जाते हैं।**

सुझावः- दिल्ली पुलिस, यातायात पुलिस, प्रवर्तन शाखा परिवहन विभाग, एमसीडी, नगर पालिका अपना काम सही तरीके से नियम के अनुसार करे और साथ ही जनता को जागरूक होने की आवश्यकता है जहा तक सम्भव हो गाड़ी नो पार्किंग जोन या मुख्य सड़को पर पार्क ना करे, पार्किंग स्थल पर ही वाहन पार्क करे। इस स्थिति में सुधार तभी आ सकता हैं। दूसरा और मुख्य कार्य जो दिल्ली की जनता को करना अति अनिवार्य है वह यह की **दिल्ली परिवहन विभाग आपसे आपके वाहन के पंजीकरण के समय जो पार्किंग फीस ठोक कर वसुल करती है और आप भी परिवहन विभाग को हस कर देकर आते हैं उस परिवहन विभाग से अपने आप पर लगने वाले इल्जामों, जुर्मानो, चालानो और अन्य सभी प्रकार की परेशानी से खुद को एवम्-अन्य जरुरत मंद लोगों को बचाने के लिए अपने द्वारा दिए हुए पैसों के बदले पार्किंग स्थल की तत्काल मांग शुरु करो।** दिल्ली की जनता अब तो जागो और अपने द्वारा भुगतान किए हुए पैसों का परिवहन विभाग से हिसाब मांगों और जरुरत पड़े तो ब्याज समेत पैसा वापिस लो,। **आपकी जानकारी के लिए बता दें की आपके द्वारा दिल्ली परिवहन विभाग को पार्किंग के नाम से ही दी गई यह रकम इतनी बन जाएगी जिससे सरकारी रेट पर इतना बड़ा पार्किंग स्थल खरीदा जा सकता है जितना बड़ा दिल्ली के अंदर पंजीकृत वाहनों को जरुरत भी नही।**

जगमोहन सिंह
ओमनी रोड सेफ्टी फाउंडेशन,

इनसाइड

महिलाएं हर दिन करें ये 3 योगासन, बिना जिम के मिलेगा स्लिम-ट्रिम लुक

एक्सरसाइज या योग करना सेहत के लिए फायदेमंद है. नियमित योग और एक्सरसाइज करने से कई तरह की बीमारियों से बचा जा सकता है. इससे कई बीमारियों से निजात भी मिलती है. बिजी रहने की वजह से या घर से बाहर न जाने की आदत के चलते कई बार महिलाओं के लिए जिम या योग केंद्र जाना पॉसिबल नहीं हो पाता है. कई बार महिलाएं चाहते हुए भी जिम नहीं जा पाती हैं और अपनी सेहत के साथ समझौता कर लेती हैं. हालांकि अगर आप चाहें तो घर में रहकर भी कुछ खास योगासन की मदद ले सकती हैं. जो आपको स्वस्थ रखने में अच्छी भूमिका निभा सकते हैं.

यूपी के लखनऊ स्थित किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी की ऑर्थोपेडिक सर्जरी डिपार्टमेंट की क्लीनिकल योग इंस्ट्रक्टर डॉ. वंदना अवस्थी से उन योगासनों के बारे में जानते हैं, जो आपको स्वस्थ रखने के साथ कई बीमारियों से राहत देने में मदद करेंगे. वैसे तो कोई भी आसन सुबह के समय करना बेहतर होता है लेकिन समय न मिलने पर जब भी करें तो खाना खाने के बाद कम से कम दो घंटे का गैप जरूर रखें. इतना ही नहीं इन योगासनों को करने से पहले अपने डॉक्टर की सलाह जरूर लें.

चक्की चलनासन

इस योगासन को करने के लिए सबसे पहले जमीन पर योगा मैट बिछाकर बैठ जायें. अपने दोनों पैरों को आगे की तरफ फैला कर मैक्सिमम गैप बनाएं. इस दौरान रीढ़ की हड्डी को सीधा रखे. अब हाथों को जमीन पर एकदम सामने की ओर सीधा रखकर उंगलियों को आपस में फंसा लें. फिर अपने हाथों को क्लॉक वाइज यानी दायीं से बायीं तरह गोल-गोल उसी तरह से घुमायें जैसे चक्की चलाई जाती है. इसके बाद विपरीत दिशा में यही प्रक्रिया दोहराएं. इस योगासन को शुरू में एक-दो मिनट करें फिर धीरे-धीरे समय को बढ़ाएं. इस योगासन से पीसीओडी की दिक्कत में राहत मिलती है. जिससे अनियमित मासिक धर्म धीरे-धीरे नियमित होने लगता है साथ ही दर्द और ऐंठन से भी राहत मिलती है. इतना ही नहीं ये मेंटल स्ट्रेस को कम करने और मोटापे से निजात दिलाने में भी मदद करता है.

तितली आसन

तितली आसन करने के लिए योगा मैट पर सूर्य की ओर मुख कर के आराम की मुद्रा में बैठें. फिर अपने दोनों पैरों को आगे की तरफ फैला कर इस तरह से मोड़ें जिससे दोनों पैरों के तलवे आपस में मिल जायें. अब दोनों हाथों से पैर के तलवों को अच्छी तरह से पकड़ लें.अब तितली की तरह अपने पैरों को हिलाएं. इस आसन को भी शुरू में एक-दो मिनट करें फिर अपनी कैपिसिटी के अनुसार धीरे-धीरे इसका समय बढ़ाएं. तितली आसन करने से भी पीसीओडी की दिक्कत से राहत मिलती है. साथ ही पीठ का दर्द और मसल्स स्ट्रेस भी दूर होता है. इतना ही नहीं इस आसन को तीन महीने की गर्भावस्था के बाद भी किया जा सकता है. ये आसन डिलीवरी को आसान बनाने में भी मदद करता है. नियमित रूप से तितली आसन करने से ब्लड सर्कुलेशन भी बेहतर होता है.

दंडासन

दंडासन करने के लिए सबसे पहले जमीन पर बैठ जायें और पैरों को सामने की ओर फैला कर आपस में मिला लें. फिर दोनों हाथों को कंधों के बराबर अपनी जांघों के पास सीधा जमीन पर रखें.इस बीच रीढ़ की हड्डी को एकदम सीधा रखें. अब दोनों पैरों के पंजो को अपनी ओर खींचें, कुछ सेकेंड रोक कर रखें फिर ढीला छोड़ दें. इस प्रक्रिया को दस से पंद्रह बार अपने सामर्थ्य के अनुसार दोहराएं.

इन चीजों को लाइफस्टाइल का हिस्सा बनाएं महिलाएं, हमेशा रहेंगी हेल्दी एंड हैप्पी

वर्चुअल एक्सरसाइज क्लासेस के जरिये भी आप फिट रह सकती हैं.

हम आपसे शेयर करने जा रहे हैं कुछ अमेजिंग फिटनेस टिप्स, जिसे फॉलो करके आप नए साल की फ्रेश और एक्टिव शुरूआत कर सकती हैं.

ऑनलाइन एक्सरसाइज

कोरोना का डर एक बार सबको फिर से सताने लगा है. ऐसे में खुद को फिट एंड फाइन रखना बहुत जरूरी है. इसलिए भीड़ में जाये बिना आप वर्चुअल एक्सरसाइज क्लासेस लेने का सिलसिला शुरू कर सकती हैं. एक्सरसाइज का ये ट्रेंड फॉलो करके आप जिम गए बिना भी फिट रह सकती हैं.

फंक्शनल फिटनेस ट्राई करें

रोज सुबह फंक्शनल फिटनेस एक्सरसाइज ट्राई करके आप दिन की एनर्जेटिक शुरूआत कर सकती हैं. इन एक्सरसाइज को करने के लिए आप घर पर रहते हुए योगा या फिटनेस एक्सपर्ट के ऑनलाइन वीडिओ देख सकती हैं और बिना कुछ खर्च किये फिटनेस ट्रेनिंग ले सकती हैं.

घर पर जिम करें

आजकल के बिजी शेड्यूल में ज्यादातर लोगों को जिम जाने का समय नहीं मिल पाता है. जिसके चलते लोग फिटनेस को अवॉयड कर देते हैं. ऐसे में नए साल पर घर में जिम सेटअप करके आप अपनी हेल्थ को बेस्ट गिफ्ट दे सकती हैं. इससे आप कम टाइम में डेली वर्कआउट कर सकेंगी.

फिटनेस एक्टिविटी करें

अगर आप फिजिकल एक्टिविटी में इन्वॉल्व होना पसंद करती हैं. तो ऐसे में नए साल पर आप मॉर्निंग वॉक, आउटडोर एक्सरसाइज, साइकलिंग और गेम्स खेलने जैसी फिजिकल एक्टिविटीज करके फिट रहने के साथ-साथ दिन की भी बेस्ट शुरूआत कर सकती हैं.

डांस प्रैक्टिस करें

अगर आप डांस करने की शौकीन हैं, तो नए साल में डांस को अपने डेली रूटीन में शामिल करके फिट रह सकती हैं. बता दें कि डांस का ये फिटनेस ट्रेंड आपका हेल्थ सीक्रेंट बन सकता है. ऐसे में भांगड़ा, जुम्बा, हिप हॉप और क्लासिकल डांस करके आप फिटनेस के साथ अपनी हॉबी भी निखार सकती हैं।

कुछ सामान्य लक्षण जो 5 तरह के गाइनेकोलॉजिकल कैंसर में होते हैं कॉमन, आप भी दें ध्यान

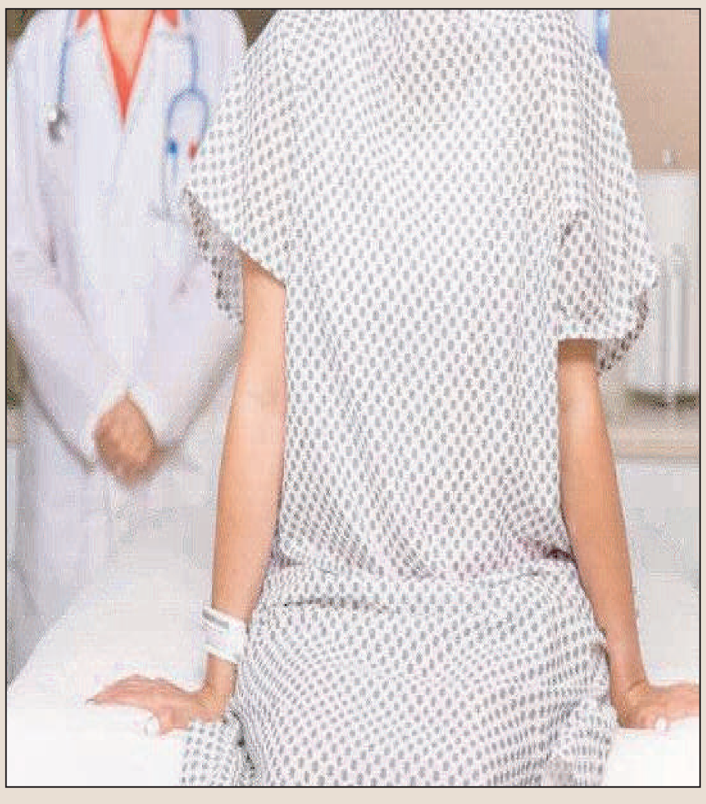

कैंसर एक जानलेवा बीमारी है. यदि इसका समय रहते इलाज शुरू ना किया जाए तो कई गंभीर मामलों में व्यक्ति की जान चली जाती है. बॉडी में ट्यूमर सेल्स की अनकंट्रोल्ड ग्रोथ सिर्फ एक बॉडी पार्ट के लिए नहीं, बल्कि पूरे शरीर के लिए खतरे की घंटी बन सकती है. कैंसर के कुछ ऐसे प्रकार हैं, जो सिर्फ महिलाओं को इनफेक्ट कर सकते हैं. ऐसे में महिलाओं में कैंसर की समस्या ज्यादा खतरनाक हो सकती है. ओवरीज, कोख या वेजाइना जैसे फीमेल रिप्रोडक्टिव पार्ट्स पर असर करने वाले ये गाइनेकोलॉजिकल कैंसर ढेरों बड़ी परेशानियों का कारण बन सकते हैं. सही समाधान के लिए सही समय पर बीमारी की पहचान कर, सही इलाज कराना जरूरी है. दवाइयों के साथ सही ट्रीटमेंट की मदद से इन परेशानियों से निजात पाई जा सकती है. आइए जानते हैं 5 तरह के गाइनेकोलॉजिकल कैंसर में कौन से आम लक्षण देखे जाते हैं :

एमडैंडरसन डॉट ओआरजी के अनुसार, वुलवर कैंसर के अलावा सभी गाइनेकोलॉजिकल कैंसर में ब्लीडिंग की समस्या देखने को मिलती है. वेजाइना से किसी भी तरह के डिस्चार्ज या ब्लीडिंग को नजरंदाज करना घातक साबित हो सकता है. पेट दर्द के साथ ही कमर दर्द भी किसी बड़े खतरे की दस्तक हो सकती है. ऐसे में सही समय डॉक्टर से परामर्श अवश्य ले लें.

-बार-बार पेशाब आना किसी गंभीर स्थिति की ओर इशारा हो सकता है. लगातार टॉयलेट जाने की शिकायत कैंसर के साथ ही अन्य परेशानियों का भी लक्षण हो सकती है. ऐसे में जल्द से जल्द डॉक्टर से सलाह करा लें.

-वेजाइना या दूसरे रिप्रोडक्टिव पार्ट्स में खुजली, जलन और ज्यादा सेंसटिविटी कैंसर का लक्षण हो सकती है. इन्फेक्शन में भी ऐसे लक्षण देखे जा सकते हैं, ऐसे में इन्हें इग्नोर करने का रिस्क लेने से बचें.

-सेक्स के दौरान या बाद में ज्यादा असामान्य दर्द महसूस होने पर जरूरी टेस्ट अवश्य करा लें. ये दर्द गाइनेकोलॉजिकल कैंसर के शुरुवाती लक्षणों में शुमार है.

-पेडू या पेल्विक एरिया में दर्द होना कैंसर की ओर संकेत करता है. बार-बार इस तरह का दर्द होने पर डॉक्टर को अवश्य दिखा लें नहीं तो समस्या के गंभीर होने की संभावना बढ़ जाती है.

-खाना खाने में असहजता, पेट जल्दी भर जाना, भूख कम लगना या सूजन भी गाइनेकोलॉजिकल कैंसर का संकेत हो सकता है. ऐसे में घबराने की जगह सही उपचार का ख्याल करें.

पाठशाला में परीक्षा लेने का मूलभूत अधिकार केवल गुरुजनों को ही होता है

सुखी भारती

श्रीसती जी के कदम, प्रभु श्रीराम जी की दिशा में बढ़ तो रहे हैं, लेकिन श्रीसती जी बड़ी उलझन में हैं, कि श्रीराम जी की परीक्षा मैं किस प्रकार से लूँ? कौन सा उपाय उत्तम रहेगा, और कोण सा गौण। उनके मन में भ्रमित विचारों का एक बवंड़र मचा हुआ है।

श्रीसती जी को, जब भगवान शंकर जी ने यह कहा, कि 'हे सती आप का मन स्थिर नहीं हो रहा, तो आप परीक्षा लेकर देख लो।' तो श्रीसती जी के मुख से कोई प्रतिक्रिया प्रस्फुटित ही नहीं हुई। श्रीसती जी ने देखा, कि भगवान शंकर जी तो वटवृक्ष के नीचे बैठ गये हैं, और मुझे परीक्षा लेने की आज्ञा दे दी है। तो क्यों अविलम्भ परीक्षा ले ही लूँ? यह सोच कर, श्रीसती जी के चरण वहाँ एक क्षण भी न ठहरे, और वे श्रीराम जी की परीक्षा लेने चल निकली।

माया का भी कैसा प्रभाव है---। जो श्रीसती जी, भगवान की परछाई बन कर, जीवन भर उनके साथ चलने के संकल्प में बँधी थी, वही श्रीसती जी भगवान शंकर के बिना ही, अपनी सबसे कठिन यात्रा पर निकल पड़ी थी। यात्रा तो वैसे भगवान की दिशा में ही थी, लेकिन उद्देश्य भगवान को नमन करना नहीं, अपितु भगवान की परीक्षा लेना था। यहाँ यह शब्द बड़े विचित्र से प्रतीत होते हैं। कारण कि श्रीसती जी संसार में वह कार्य करने निकली थी, जो कार्य का प्रभु ने विधान ही नहीं बनाया था। क्योंकि जैसे सूर्य को दीपक नहीं दिखाया जा सकता, सागर को पानी के लौटे की धौंस कैसी, ठीक वैसे ही कोई जीव, अपने प्रभु या भगवान की परीक्षा ले, यह नीतिसंगत था ही नहीं। हम पाठशालायों में भी, बचपन से देखते आ रहे हैं, कि कभी भी, किसी भी पाठशाला में परीक्षा लेने का मूलभूत अधिकार केवल गुरु जनों को ही होता है। वे ही प्रश्न पत्र बांटते हैं, और विद्यार्थी जन उन प्रश्नों का उत्तर, प्रदान की गई पत्रिका पर लिखते हैं। क्या कभी देखा है, कि गुरुजन तो पंक्ति बनाकर नीचे बैठे हैं, और विद्यार्थी जन उन्हें उन्हें उपदेश दे रहे हैं? श्रीसती जी को भी ऐसे ही नियम का अनुसरण करना चाहिए था, कि वह किसी अबोध व अज्ञानी बालक की भाँति श्रीराम जी के समक्ष जाती, और श्रीराम उनके बिखरे मन का समाधान करते।

श्रीसती जी के कदम, प्रभु श्रीराम जी की दिशा में बढ़ तो रहे हैं, लेकिन श्रीसती जी बड़ी उलझन में हैं, कि श्रीराम जी की परीक्षा मैं किस प्रकार से लूँ? कौन सा उपाय उत्तम रहेगा, और कोण सा गौण। उनके मन में भ्रमित विचारों का एक बवंड़र मचा हुआ है। कभी वे कोई युक्ति अपनाने का संकल्प लेती हैं, तो कभी उसी बनाई युक्ति को क्रियावंत न करने का विचार कर, फिर से कोई नई युक्ति की सृजना में लग जाती हैं।

अंत में श्रीसती जी के मन में एक युक्ति ने कील ठोक ही दिया। श्रीसती जी ने सोचा, कि क्यों न मैं जगत जननी श्रीसीता जी का ही रुप धारण कर लूँ? इससे होगा क्या, कि अगर श्रीराम जी एक साधारण मानव होंगे, तो मुझे श्रीसीता जी समझ कर, झट मुझसे आलिंगन करने को तत्पर हो उठेंगे। इससे सिद्ध हो जायेगा, कि वे कोई भगवान वगैरह नहीं हैं। लेकिन अगर भूले से भी, वे भगवान होंगे, तो मुझे पहचान ही लेंगे, कि मैं भोलेनाथ की पत्नि सती हुँ-

'पुनि पुनि हृदयँ बिचारु करि धरि सीता कर रुप।
आगें होइ चलि पंथ तेहिं जेहिं आवत नरभूप।।'

श्रीसती जी ने, माता सीता जी का रुप धारण कर लिआ। वे देख रही हैं, कि श्रीराम जी पत्नी वियोग में अतिअंत व्याकुल हैं। एक बार तो श्रीसती जी के मन में फिर से आया, कि मैं नाहक ही इनकी परीक्षा लेने चली आई। क्योंकि इनकी दयानीय स्थिति देख कर, यह तो पहली दृष्टि में ही स्पष्ट हो गया है, कि श्रीराम जी कोई भगवान नहीं हो सकते। वे निश्चित ही एक साधारण राज कुमार हैं। क्या भगवान भी कभी मोहग्रस्ति हो, ऐसे पीड़तिों की भाँति तड़प सकता है, जैसे कि मेरे समक्ष श्रीराम तड़प रहे हैं।

श्रीसती जी ने देखा, कि श्रीराम जी का तो मेरी ओर ध्यान ही नहीं जा रहा। लगता है, वे होश में नहीं हैं। देखो तो वो कैसे छाती पीट-पीट कर रो रहे हैं। मानों अभी उनके प्राण निकल जायेंगे। मैं स्वयं ही उनके समक्ष व समीप चली जाती हुँ। मुझे देखते ही उनके प्राणों में प्राण लौट आयेंगे।

श्रीसती जी ने ठीक ऐसे ही किया। वे श्रीराम जी के ठीक सामने, वहाँ जा खड़ी हुई, जिस ओर श्रीराम आगे बढ़ रहे थे। श्रीराम जी के नेत्रें में अश्रुयों की झड़ी लगी हुई थी। वे पत्तों-पत्तों, टहनियों-टहनियों से पूछ रहे थे, कि बताओ मेरी सीता कहाँ है? हे भँवरो हे! पक्षियो, तुम्हीं बता दो, कि जनक नंदनी कहाँ है?

संस्कारशाला: गैजेट-मुक्त पारिवारिक समय में पुन: जुड़ना

-प्रियंका श्रीवास्तव

स्क्रीन और डिजिटल विकर्षणों के प्रभुत्व वाले युग में, परिवार के साथ फिर से जुड़ने के सार्थक तरीके खोजना एक चुनौती की तरह महसूस हो सकता है। हालाँकि, पारिवारिक समय का सार - गैजेट्स से मुक्त - हमारे शुरुआती बचपन के दिनों की खुशियों को पुनर्जीवित कर सकता है। पारिवारिक संबंधों को समृद्ध करने और यादगार यादें बनाने के लिए यहां कुछ शाश्वत गतिविधियां दी गई हैं।

1. बोर्ड गेम और पहेलियाँ

बोर्ड गेम और पहेलियाँ पारिवारिक संबंधों के लिए अद्भुत उपकरण हैं। मोनोपोली, स्क्रैबल या यहां तक कि ताश का एक साधारण डेक जैसे खेल घंटों मनोरंजन और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा प्रदान कर सकते हैं। ये गतिविधियाँ रणनीतिक सोच, टीम वर्क और सबसे महत्वपूर्ण हँसी-मज़ाक को प्रोत्साहित करती हैं।

2. एक साथ खाना बनाना

एक परिवार के रूप में खाना पकाना न केवल मूल्यवान जीवन कौशल सिखाता है बल्कि बातचीत और सहयोग का अवसर भी पैदा करता है। ऐसी रेसिपी चुनें जिसमें हर कोई योगदान दे सके, चाहे वह कुकीज़ पकाना हो, घर का बना पिज़्ज़ा बनाना हो, या परिवार का पसंदीदा भोजन तैयार करना हो। एक साथ मिलकर कुछ बनाने की प्रक्रिया अविश्वसनीय रूप से फायदेमंद हो सकती है।

3. बाहरी गतिविधियाँ

प्रकृति परिवारों के लिए एक विशाल खेल का मैदान प्रदान करती है। लंबी पैदल यात्रा, बाइकिंग, पिकनिक या बस पार्क में टहलने से परिवारों को ताजी हवा और शारीरिक गतिविधि का आनंद लेने का मौका मिलता है। ये सैर-सपाटे दृश्यों में बदलाव और दिनचर्या से छुट्टी प्रदान करते हैं, रोमांच और खोज की भावना को बढ़ावा देते हैं।

4. कहानी सुनाना और पढ़ना, लोककथाओं को साझा करके या साथ में किताबें पढ़कर कहानी कहने की कला को पुनर्जीवित करें। एक पढ़ने का समय निर्धारित करें जहाँ परिवार का प्रत्येक सदस्य एक अध्याय पढ़ सके या एक कहानी साझा कर सके। इससे न केवल साक्षरता कौशल में सुधार होता है बल्कि कल्पना और सहानुभूति भी बढ़ती है।

5. कला एवं शिल्प

पेंटिंग, ड्राइंग या क्राफ्टिंग जैसी रचनात्मक परियोजनाओं में संलग्न रहें। ये गतिविधियाँ आरामदायक और उत्तेजक दोनों हो सकती हैं, जो आत्म-अभिव्यक्ति के लिए एक आदर्श अवसर प्रदान करती हैं। चाहे वह हस्तनिर्मित कार्ड बनाना हो, स्क्रैपबुकिंग करना हो, या पारिवारिक कला परियोजना बनाना हो, साझा रचनात्मक प्रक्रिया पारिवारिक संबंधों को मजबूत कर सकती है।

6. बागवानी

एक साथ मिलकर बगीचा शुरू करना एक संपूर्ण पारिवारिक परियोजना हो सकती है। चाहे आपके पास बालकनी पर बस कुछ गमले हों, बागवानी धैर्य और जिम्मेदारी सिखाती है। यह प्रकृति के बारे में जानने और अपने स्वयं के पौधे, फूल या सब्जियाँ उगाने की संतुष्टि का आनंद लेने का एक व्यावहारिक तरीका है।

7. संगीत और नृत्य

संगीत लोगों को एक साथ लाने का जादुई तरीका है। एक पारिवारिक संगीत रात्रि का आयोजन करें जहाँ हर कोई कोई वाद्ययंत्र बजाएगा, गाएगा, या बस लिविंग रूम के चारों ओर नृत्य करेगा। पसंदीदा गानों की एक पारिवारिक प्लेलिस्ट बनाएं और एक साथ लय और सामंजस्य का आनंद लें।

8. स्वयंसेवी कार्य

एक परिवार के रूप में सामुदायिक सेवा में भाग लेने से कृतज्ञता और सहानुभूति की भावना पैदा हो सकती है। किसी स्थानीय चैरिटी में स्वयंसेवक बनें, किसी पार्क की सफ़ाई करें, या किसी ज़रूरतमंद पड़ोसी की मदद करें। दयालुता के ये कार्य न केवल दूसरों को लाभान्वित करते हैं बल्कि साझा उद्देश्य और पूर्ति की भावना भी लाते हैं।

9. सचेत अभ्यास

योग, ध्यान, या सरल साँस लेने के व्यायाम जैसे सचेतन अभ्यासों का परिचय दें। ये अभ्यास परिवार के सदस्यों को गहरे स्तर पर जुड़ने, तनाव कम करने और शांति और कल्याण की भावना पैदा करने में मदद कर सकते हैं।

10. नियमित पारिवारिक बैठकें

प्रत्येक सप्ताह के बारे में चर्चा करने, अनुभव साझा करने और भविष्य की गतिविधियों की योजना बनाने के लिए नियमित पारिवारिक बैठकों के लिए समय निर्धारित करें। यह खुले संचार के लिए एक मंच बनाता है और यह सुनिश्चित करता है कि हर किसी की आवाज़ सुनी जाए और उसे महत्व दिया जाए।

हमारी तेज़-तर्रार, प्रौद्योगिकी-संचालित दुनिया में, एक-दूसरे से दूर रहना और एक साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इन गतिविधियों को अपनी दिनचर्या में शामिल करके, आप एक गैजेट-मुक्त वातावरण बना सकते हैं जो मजबूत रिश्तों को बढ़ावा देता है, संचार को बढ़ाता है और बचपन की सरल खुशियाँ वापस लाता है। अपने प्रियजनों के साथ फिर से जुड़ने और हर पल को महत्वपूर्ण बनाने के अवसर का लाभ उठाएँ।

जल्द खुलेगा नारायणा फ्लाईओवर, वाहन चालकों को जाम से मिलेगी राहत

दिल्ली के नारायणा फ्लाईओवर की मरम्मत का काम पूरा हो गया है। 22 से 23 मई को फ्लाईओवर खुलने की उम्मीद जताई जा रही है। फ्लाईओवर खुलने से वाहन चालकों को जाम से जल्द ही राहत मिलने वाली है। 29 अप्रैल को ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर नारायणा फ्लाईओवर के 20 दिनों के लिए बंद होने की सूचना दी थी।

पश्चिमी दिल्ली। रिंग रोड स्थित नारायणा फ्लाईओवर के मरम्मत का कार्य 15 दिनों में पूरा हो गया है। फ्लाईओवर के दो ज्वाइंट का कार्य समाप्त होने के बाद अब तीसरे ज्वाइंट के मरम्मत का कार्य शुक्रवार को समाप्त हुआ है, जिसे सूखने के लिए चार दिन का समय लगेगा। इसलिए 22 से 23 मई को फ्लाईओवर खुलने की उम्मीद जताई जा रही है।

फ्लाईओवर खुलने से वाहन चालकों को जाम से जल्द ही राहत मिलने वाली है। नारायणा फ्लाईओवर कई अलग-अलग जगहों के ज्वाइंट का हिस्सा टूटकर गिर रहा था जिसकी स्थानीय लोगों ने लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) से कई बार शिकायत की थी। इसके बाद विभाग ने शिकायत का संज्ञान लेकर फ्लाईओवर की मरम्मत का कार्य शुरू कराया।

20 दिनों के लिए किया था बंद

29 अप्रैल को ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर नारायणा फ्लाईओवर के 20 दिनों के लिए बंद होने की सूचना दी थी। जिसमें कहा गया था कि फ्लाईओवर के मरम्मत के कार्य के चलते रास्ते को बंद किया जा रहा है इसलिए वाहन चालक वैकल्पिक मार्गों का प्रयोग करें।

ट्रैफिक पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 2 मई से फ्लाईओवर के ज्वाइंट की मरम्मत का कार्य शुरू हुआ था। 15 दिनों में कार्य पूरा हो गया है। दो ज्वाइंट को जोड़ने का कार्य पहले ही पूरा हो चुका है जबकि तीसरे ज्वाइंट की मरम्मत का कार्य शुक्रवार शाम तक समाप्त हुआ है।

तीसरे ज्वाइंट को सूखने के लिए तीन से चार दिन का समय लगेगा। 22 या 23 मई को वाहन चालकों के लिए फ्लाईओवर शुरू होने की संभावना है।

अभी होगी सात और घोटालों की जांच', दिल्ली में वोटिंग से पहले अमित शाह ने केजरीवाल का जिक्र कर क्यों कहा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के छठे चरण के लिए प्रचार तेज हो गया है. इस बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली के संगम विहार में एक जनसभा को संबोधित किया. उन्होंने AAP और कांग्रेस पर निशाना साधा और कहा कि अरविंद केजरीवाल और राहुल बाबा के समर्थक पाकिस्तान में ज्यादा हैं.

अमित शाह ने कहा, "आज तक केजरीवाल जैसा यू-टर्न लेने वाला आदमी नहीं देखा. उन्होंने नौकरी छोड़कर एनजीओ बनाया और शपथ लेकर कहते थे कि हम राजनीति में नहीं आएंगे और पार्टी बना ली. वो कहते थे कि मैं कभी मुख्यमंत्री नहीं बनूंगा, लेकिन वह मुख्यमंत्री बने. वो कहते थे कि दिल्ली में कांग्रेस की सरकार गिराकर उन्हें जेल में डालेंगे. आज सत्ता के लिए वो खुद कांग्रेस की गोदी में बैठकर साथ में चुनाव लड़ रहे हैं. आज वो सिक्योरिटी, गाड़ी लेने के साथ ही शीश महल लेकर रह रहे हैं."

घोटालेबाजों की सरकार है AAP- अमित शाह

अमित शाह ने AAP को घोटालेबाजों की सरकार बताया. उन्होंने कहा, "केजरीवाल की सरकार घोटालेबाजों की सरकार है. 125 करोड़ का शीश महल केजरीवाल ने बनाया है. केजरीवाल के जैसा निर्लज व्यक्ति मैंने नहीं देखा. अभी तो केजरीवाल की शराब घोटालों की जांच हुई है, लेकिन अभी 7 और घोटालों की जांच होना बाकी है. चार चरण में नरेंद्र मोदी पूर्ण बहुमत 270 से ज्यादा सीटें जीत चुके हैं और पांचवे, छठे और सांतवे चरण में हम 400 सीटों से ज्यादा की और आगे बढ़ रहे हैं."

राहुल गांधी और खरगे पर बरसे अमित शाह

उन्होंने राहुल गांधी पर भी हमला बोला. शाह ने कहा, "राहुल बाबा को मैं बताना चाहता हूं, POK भारत का है रहेगा और हम उसको वापस लेकर रहेंगे यह हमारा वादा है. मल्लिकार्जुन खरगे कहते हैं कि कश्मीर के बारे में हमें नहीं बोलना चाहिए, लेकिन में उनको बता देना चाहता हूं कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और उसके लिए भारत का बच्चा-बच्चा जी जान लगा देगा."

अमित शाह ने किया आलिया-मालिया और जमालिया का जिक्र

उन्होंने कहा कि मनमोहन सरकार में पकिस्तान से आलिया-मालिया और जमालिया आकर भारत में आतंकी घटनाओं को अंजाम देते थे, लेकिन अब मोदी सरकार में सभी आतंकियों को उनका सही स्थान दिखा दिया गया है. कांग्रेस राज में पाकिस्तान से आकर आतंकी भारत में हमले करते थे. नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना है।

आतंकी फंडिंग मामले में मसासोसांग एओ को दिल्ली हाईकोर्ट ने जमानत देने से किया इनकार

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली हाईकोर्ट (Delhi High Court) ने निचली अदालत के निर्णय को बरकरार रखते हुए कहा कि नागा विद्रोही समूह नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल आफ नागालैंड-इसाक मुइवा (NSCN-IM) के सदस्य मसासोसांग एओ (Masasosang AO) पर लगाए गए आरोप गंभीर हैं। एनएससीएन (आईएम) के लिए आतंकी फंड जुटाने और इकट्ठा करने के लिए सभी आरोपियों के बीच एक आपराधिक साजिश रची गई थी।

नई दिल्ली। टेरर फंडिंग मामले में नागा विद्रोही समूह नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल आफ नागालैंड-इसाक मुइवा (NSCN-IM) के सदस्य मासासोसांग एओ (Masasosang Ao) को दिल्ली हाईकोर्ट (Delhi High Court) ने जमानत देने से इनकार कर दिया है।

दिल्ली हाईकोर्ट ने निचली अदालत के निर्णय को बरकरार रखते हुए कहा कि आरोपी पर लगाए गए आरोप गंभीर हैं। अभियोजन पक्ष के अनुसार एनएससीएन (आईएम) के लिए आतंकी फंड जुटाने और इकट्ठा करने के लिए सभी आरोपियों के बीच एक आपराधिक साजिश रची गई थी।

अलेमला जमीर की निशानदेही पर किया गया था गिरफ्तार

NSCN-IM नेता अलेमला जमीर (Alemala Zameer) को बड़ी मात्रा में नगदी ले जाने के आरोप में 17 दिसम्बर 2019 को हिरासत में लिया गया था। अलेमला जमीर की निशानदेही पर मसासोसांग एओ को गिरफ्तार किया गया था।

आरोपी ने धन छिपाने के लिए खोले थे बैंक खाते

आतंकी फंडिंग से मिले पैसे को छिपाने और अन्यत्र स्थानांतरित करने के लिए बैंक खाते खोले थे। अदालत ने कहा कि सरकारी कर्मचारी होने के नाते अपीलकर्ता को ऐसे की खातों में होने वाले वित्तीय लेनदेन गंभीरता के प्रति सचेत रहना चाहिए था।

इस सीट पर व्यापारी और मुस्लिम मतदाता निर्णायक, रोचक है इतिहास

चांदनी चौक लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र वर्ष 1956 में अस्तित्व में आया। इस क्षेत्र में पुरानी दिल्ली का वह हिस्सा भी आता है जिसे मुगलकालीन बसावट के लिए जाना जाता है। चांदनी चौक और सदर बाजार देश का प्रमुख थोक बाजार है तो मटियामहल और बल्लीमारान मुस्लिम बहुल क्षेत्र है। इसी क्षेत्र में लालकिला और जामा मस्जिद आती हैं। पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के साथ टाउन हाल इसी क्षेत्र में है।

नई दिल्ली। चांदनी चौक लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र वर्ष 1956 में अस्तित्व में आया। इस क्षेत्र में पुरानी दिल्ली का वह हिस्सा भी आता है, जिसे मुगलकालीन बसावट के लिए जाना जाता है।

चांदनी चौक और सदर बाजार देश का प्रमुख थोक बाजार है तो मटियामहल और बल्लीमारान मुस्लिम बहुल क्षेत्र है। इसी क्षेत्र में लालकिला और जामा मस्जिद आती हैं।

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के साथ ही टाउन हाल भी इसी क्षेत्र में है। देश के सबसे पुराने और पहले निर्वाचन क्षेत्रों में से एक होने के नाते चांदनी चौक से राधा रमण, सिकंदर बख्त, विजय गोयल, कपिल सिब्बल और डा. हर्षवर्धन जैसे प्रमुख राजनेताओं ने चुनाव लड़ा।

चांदनी चौक में वर्ष 1957 से लेकर वर्ष 2014 तक कुल 15 लोस चुनाव हो चुके हैं। उनमें से कांग्रेस पार्टी अब तक नौ बार जीत चुकी है, वहीं भाजपा चार बार जीत चुकी है।

ये हैं खास मुद्दे

यातायात जाम
पार्किंग स्थलों की कमी
वायु प्रदूषण
लटकते बिजली के तार
गदंगी

इन प्रत्याशियों के बीच मुकाबला

भाजपा प्रत्याशी- प्रवीन खंडेलवाल व्यापारी नेता हैं।

मजबूत पक्षः काफी पहले चुनाव अभियान आरंभ किया, व्यापारियों में लोकप्रिय और मोदी की गारंटी।

कमजोर पक्षः पहली बार लोकसभा के चुनावी मैदान, मुख्य धारा की राजनीति का कम अनुभव।

कांग्रेस प्रत्याशी-जय प्रकाश अग्रवाल

राजनीतिज्ञ हैं, एमसीडी से लेकर लोकसभा का चुनाव लड़े और जीते, राज्यसभा सदस्य रहे।

मजबूत पक्षः इस बार अपना 12वां चुनाव लड़ेंगे, क्षेत्र के लोगों से पुराना नाता, कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता।

कमजोर पक्षः कार्यकर्ताओं की कमी और आम आदमी पार्टी पर निर्भरता।

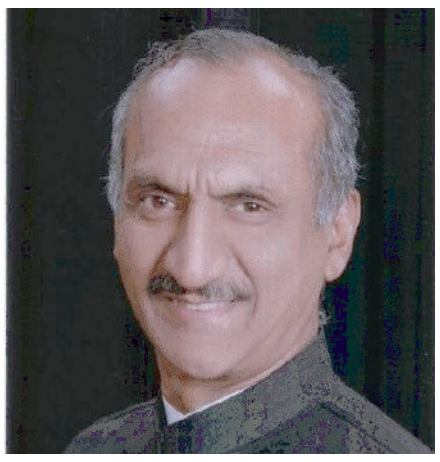

मतदाताओं की स्थिति

क्षेत्र	पुरुष	महिला	अन्य
शालीमार बाग	99,445	87,514	13
त्री नगर	90,687	78,169	6
सदर बाजार	1,01,421	88,476	14
चांदनी चौक	66,829	55,630	18
मटिया महल	63,896	58,984	25
बल्लीमारान	80,508	67,038	17
आदर्श नगर	92,557	76,169	46
शकुर बस्ती	75,620	71,792	5
वजीरपुर	1,00,974	82,412	15
माडल टाउन	94,190	77,259	1

दिल्ली में बिजली की अधिकतम मांग का टूटा रिकॉर्ड, राजधानी में पहली बार 7717 मेगावाट की खपत

परिवहन विशेष न्यूज

गर्मी से दिल्लीवासी बेहाल हैं जिससे बिजली की खपत बढ़ रही है। मंगलवार को अधिकतम मांग का रिकार्ड टूट गया। अपराह्न 3 .33 बजे अधिकतम मांग 7717 मेगावाट पहुंच गई। इससे पहले दिल्ली में बिजली की अधिकतम मांग 29 जून 2022 को 7695 मेगावाट तक पहुंची थी। मौसम को देखते हुए आने वाले दिनों में मांग 8200 मेगावाट से ऊपर पहुंचने की संभावना जताई जा रही है।

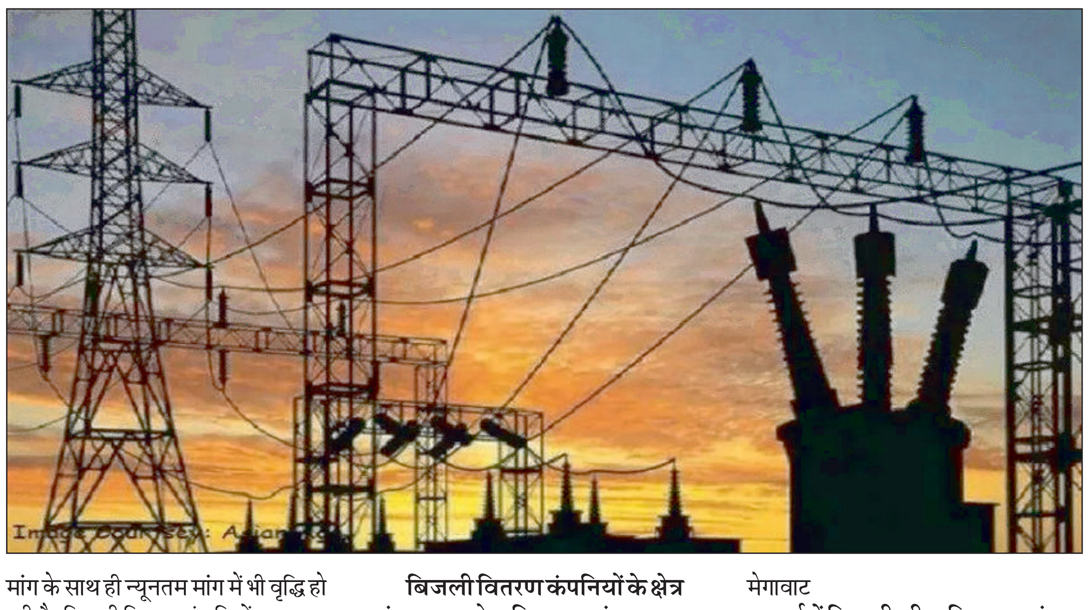

नई दिल्ली। गर्मी से दिल्लीवासी बेहाल हैं जिससे बिजली की खपत बढ़ रही है। मंगलवार को अधिकतम मांग का रिकार्ड टूट गया। अपराह्न 3.33 बजे अधिकतम मांग 7717 मेगावाट पहुंच गई। इससे पहले दिल्ली में बिजली की अधिकतम मांग 29 जून, 2022 को 7695 मेगावाट तक पहुंची थी। मौसम को देखते हुए आने वाले दिनों में मांग 8200 मेगावाट से ऊपर पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। मई में ही मांग में लगभग 31 सौ मेगावाट की वृद्धि हुई है।

दिल्ली में लगातार चौथे दिन सात हजार मेगावाट से ऊपर रही है मांग। अधिकतम मांग के साथ ही न्यूनतम मांग में भी वृद्धि हो रही है। बिजली वितरण कंपनियों का कहना है कि गर्मी के कारण एयर कंडीशनर, कूलर, पंखे आदि का उपयोग अधिक हो रहा है जिससे बिजली की मांग बढ़ रही है। इसे ध्यान में रखकर जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। बिजली की पर्याप्त व्यवस्था की गई है।

बिजली वितरण कंपनियों के क्षेत्र मंगलवार को अधिकतम मांग

बीएसईएस राजधानी पावर लिमिटेड- 3404 मेगावाट

बीएसईएस यमुना पावर लिमिटेड- 1728 मेगावाट

टाटा पावर दिल्ली डिसट्रिब्यूशन- 2225 मेगावाट

मई में बिजली की अधिकतम मांग

तिथि 2024 2023
2022
एक मई 4738 3644
6048
18 मई 7174 5595
6665
19 मई 7164 5518
7070
20 मई 7572 5527
6943

वर्ष बिजली की अधिकतम मांग (मेगावाट)

22 अगस्त 2023
7438
29 जून 2022 7695
02 जुलाई 2021 7326
29 जून 2020 6314
02 जुलाई 2019
7409
10 जुलाई 2018 7016
06 जून 2017 6526
01 जुलाई 2016 6261
19 जून 2015 5846
15 जुलाई 2014
5925
01 जुलाई 2010
4720
वर्ष 2005 3490
वर्ष 2002 2879

मनीष सिसोदिया की 31 मई तक बढी हिरासत

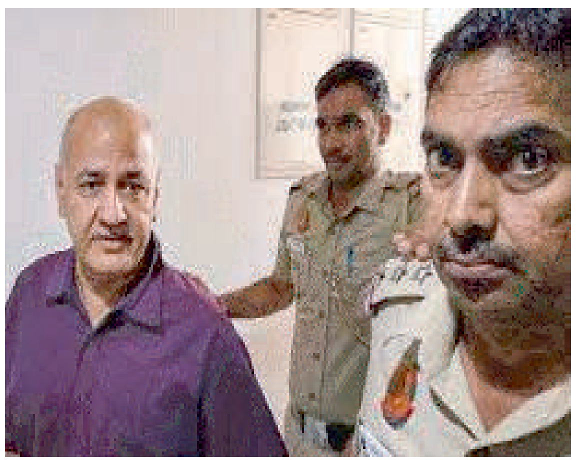

परिवहन विशेष। एसडी सेठी। विडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिए तिहाड जेल से राउज एवेन्यु कोर्ट में मंगलवार को पेश कथित शराब घोटाले में आरोपी दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को कोर्ट से राहत नहीं मिली है। कोर्ट ने उनकी न्यायिक हिरासत 31 मई तक के लिए बढा दी है। दिल्ली हाईकोर्ट में भी मंगलवार शाम को ही कथित शराब घोटाले से जुडे मामले में जमानत याचिका पर फैंसला आया और उच्च न्यायालय ने जमानत याचिका को रद्द कर दिया। उल्लेखनीय है कि मनीष सिसोदिया को सीबीआई ने पिछले साल 26 फरवरी और ईडी ने 9 मार्च को गिरफ्तार किया था। राउज ऐवेन्यु कोर्ट ने मनीष सिसोदिया की न्यायिक हिरासत 31 मई तक बढाते हुए आरोपियों से लिखित में यह बताने के लिए कहा कि अन रिलाइड दस्तावेजों की जांच के लिए कितना समय लगेगा।सिसोदिया को विडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिए जेल से कोर्ट में पेश किया गया। राउज एवेन्यु कोर्ट में मामले की अगली

कोकोनट फैक्ट्री में लगी भीषण आग, लाखों का सामान जलकर राख

सोहना। सोहना कस्बे के निकटवर्ती गांव आटा में स्थित कोकोनट फैक्ट्री में भीषण आग लग गई । आग लगने से लाखों रुपये का सामान जलकर राख हो गया। 4 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया । आग को बुझाने में फायर ब्रिगेड की 4 गाड़ियों का इस्तेमाल किया गया । वहीं आग लगने के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है।

कस्बे के इंद्री मार्ग पर स्थित गांव आटा में इंफा प्रोडक्ट फैक्ट्री में सोमवार दोपहर को अचानक आग लग गई। आग लगने से फैक्ट्री में अफरा तफरी मच गई। फैक्ट्री संचालकों ने तुरंत ही आग बुझाने के लिए फायर ब्रिगेड विभाग को सूचना दी। सूचना मिलने पर सोहना, तावडू व नूंह की 4 गाड़ियां मौके पर पहुंच गईं तथा आग को बुझाने लगी। जिन्होंने करीब 4 घंटे की कड़ी मेहनत के बाद आग पर काबू पा लिया । आग से लाखों रुपये का सामान जलकर राख हो गया । आग लगने के कारणों का पता नहीं चल सका है। फैक्ट्री संचालक विनोद डागर ने बताया कि आग लगने के कारणों का अभी कुछ पता नहीं चला है। आग से लाखों रुपये का नुकसान पहुंचा है। वहीं फायर ब्रिगेड विभाग अधिकारी जयबीर भड़ाना ने बताया कि आग पर पूर्ण रूप से काबू कर लिया है। कारणों का पता नहीं लग सका है।

बीजेपी प्रत्याशी व केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर पर मुकदमा दर्ज, आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप

परिवहन विशेष न्यूज

आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन को लेकर बीजेपी प्रत्याशी व केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर पर मुकदमा दर्ज किया गया है। समाज शिक्षा पंचायत अधिकारी राजेश पाराशार की शिकायत पर डबुआ थाना में मामला दर्ज किया गया है। पाली बारात घर पर बिना अनुमति के बीजेपी पार्टी का चुनाव संबंधित झंडा-पोस्टर लगाया गया था। 17 मई को इस बाबत प्रत्याशी कृष्णपाल गुर्जर को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था।

फरीदाबाद। आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन को लेकर बीजेपी प्रत्याशी व केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर पर मुकदमा दर्ज किया गया है। समाज शिक्षा पंचायत अधिकारी राजेश पाराशार की शिकायत पर डबुआ थाना में मामला दर्ज किया गया है।

जानकारी के मुताबिक, पाली बारात घर पर बिना अनुमति के बीजेपी पार्टी का चुनाव संबंधित झंडा-पोस्टर लगाया गया था। 17 मई को इस बाबत प्रत्याशी कृष्णपाल गुर्जर को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। उनकी ओर से इसका जबाव नहीं मिलने पर मुकदमा दर्ज किया गयाहै।

बता दें कि इस तरह के विज्ञापन के लिए जिला प्रशासन से अनुमति लेनी पड़ती है। उन पर आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का यह पहला मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस मामला दर्ज कर जांच में जुट गई है।

इनेलो प्रत्याशी सुनील तेवतिया के खिलाफ मुकदमा दर्ज

उधर, चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन करने पर इनेलो प्रत्याशी सुनील तेवतिया के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया। इससे पहले इनको कारण बताओ नोटिस दिया गया था, लेकिन इनेलो प्रत्याशी ने कारण बताओ नोटिस का कोई जवाब नहीं दिया।

समाज शिक्षा एवं पंचायत अधिकारी ने सदर थाना बल्लभगढ़ में शिकायत देकर कहा कि इनेलो प्रत्याशी ने कई जगहों पर गलत तरीके से अवैध होर्डिंग लगा रखे हैं। जबकि इन जगहों को जिला निर्वाचन अधिकारी की ओर से निर्धारित नहीं किया गया है।

प्रत्याशी ने दयालपुर में बिजली के खंभे पर अपना होर्डिंग लगाया हुआ था। इसको लेकर पहले कारण बताओ नोटिस जारी किया गया, लेकिन नोटिस का कोई जवाब नहीं दिया गया।

पीएम मोदी ने किया व्यवस्था परिवर्तन का काम : कृष्णपाल गुर्जर

भाजपा प्रत्याशी कृष्णपाल गुर्जर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दस सालों में व्यवस्था परिवर्तन का काम किया है। ऐसा सुशासन दिया, जिसमें अमन-चैन का माहौल बना है और गरीबों का भला हुआ है। गुर्जर पृथला विधानसभा क्षेत्र के गदपुरी टोल पर उत्कर्ष चौधरी द्वारा आयोजित विजय सम्मेलन में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि देश आर्थिक और सामाजिक तौर पर सुदृढ़ हुआ। पिछले छह दशकों में विकास नहीं हुआ, उतना विकास मोदी ने मात्र दस सालों में कर दिखाया। अब देश को सुपर पावर बनाना है तो यह कार्य प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ही कर सकते हैं। बस इसके लिए जनता को पूर्ण बहुमत वाली भाजपा सरकार के लिए अपना समर्थन देना है।

इस मौके पर ग्रामीणों ने 51 मीटर लंबी पगड़ी बांध कर अभिनंदन किया। कार्यक्रम में पलवल भाजपा जिलाध्यक्ष चरण सिंह तेवतिया, वरिष्ठ नेता हरेंद्र पाल राणा, सतबीर पटेल, महेंद्र भड़ाना, भिडूकी सरपंच शशिबाला तेवतिया, रमी चेयरमैन, इंद्र मेंबर, सतबीर बैंसला, विनोद चौधरी, रामकुमार भड़ाना मौजूद थे।

एसी मैकेनिक की हत्या को लेकर बड़ा खुलासा, तो क्या इस वजह से युवक को मार डाला?

गाजियाबाद। खोड़ा थाना क्षेत्र के सरस्वती विहार (Saraswati Vihar) में रहने वाले एसी मैकेनिक जसबीर की घर में घुसकर हत्या कर दी गई। पुलिस की जांच में सामने आया है कि उस रात कुछ युवकों से जसबीर का विवाद हुआ था और उसने एक युवक को थप्पड़ जड़ दिया था। अंदेशा है कि उसी का बदला लेने की हत्या की गई हो। मृतक के दोस्त ने दो युवकों के नाम पुलिस को बताए हैं। दोनों संदिग्ध अभी फरार हैं। पुलिस उनकी तलाश कर रही है। हत्या की सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने जसबीर के दोस्तों से पूछताछ की और सीसीटीवी कैमरे को भी खंगाला। सीसीटीवी में रात करीब सवा 11 बजे एक संदिग्ध घर में घुसता दिख रहा है। पूछताछ में जसबीर के दोस्तों ने दो लोगों के नाम पुलिस को बताए हैं, दोनों संदिग्ध फिलहाल फरार है।

डेढ़ महीने से नहीं रखता था मोबाइल

पुलिस जांच में सामने आया है कि मृतक जसबीर पिछले करीब डेढ़ महीने से मोबाइल नहीं रखता था। हत्या के बाद भी पुलिस को मौके से कोई मोबाइल नहीं मिला है। वहीं मृतक की बहन अरुणा ने बताया कि वह अपने दोस्तों के मोबाइल से दूसरे तीसरे दिन फोन करके बात करता था। पुलिस घटना के दौरान सक्रिय संदिग्ध नंबरों को भी खंगाल रही है।

विश्वास न्यूज के फैक्ट चेकर्स ने गुरुग्राम में दी फैक्ट चेकिंग की ट्रेनिंग

विश्वास न्यूज के फैक्ट चेकर्स ने मंगलवार को हरियाणा के गुरुग्राम स्थित एसजीटी यूनिवर्सिटी में फेक न्यूज को पहचानने और उससे बचने की ट्रेनिंग दी। इस कार्यक्रम में विश्वास न्यूज की सीनियर एडिटर उर्वशी कपूर और डिप्टी एडिटर पल्लवी मिश्रा प्रतिभागियों से रूबरू हुईं। ट्रेनिंग की शुरुआत करते हुए पल्लवी मिश्रा ने विश्वास न्यूज के बारे में विस्तार से बताते हुए 'सच के साथी' प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में बताया।

गुरुग्राम। विश्वास न्यूज के फैक्ट चेकर्स ने मंगलवार को हरियाणा के गुरुग्राम स्थित एसजीटी यूनिवर्सिटी में फेक न्यूज को पहचानने और उससे बचने की ट्रेनिंग दी। इस कार्यक्रम में विश्वास न्यूज की सीनियर एडिटर उर्वशी कपूर और डिप्टी एडिटर पल्लवी मिश्रा प्रतिभागियों से रूबरू हुईं।

ट्रेनिंग की शुरुआत करते हुए पल्लवी मिश्रा ने विश्वास न्यूज के बारे में विस्तार से बताते हुए 'सच के साथी' प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि इंटरनेट के बढ़ते इस्तेमाल के साथ भ्रामक व फेक सूचनाओं के प्रसार में तेजी आई है। कई बार यूजर्स अनजाने में तो कई दफे जानबूझकर इन सूचनाओं को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। इस वजह से कई बार निजी व वित्तीय के साथ-साथ सामुदायिक और सामाजिक नुकसान भी होता है।

कार्यक्रम में शामिल लोगों को मुख्य तौर पर डिजिटल सेफ्टी के तरीके, डीपफेक से बचाव के उपाय, फैक्ट चेकिंग की बुनियादी जानकारी के बारे में प्रशिक्षित किया गया। कार्यक्रम में फेक सूचनाओं की पहचान के बुनियादी तौर-तरीकों और ऑनलाइन टूल्स के बारे में भी जानकारी दी गई।

उर्वशी कपूर ने कार्यक्रम में मौजूद लोगों को बताया कि पिछले कुछ वक्त से डीपफेक वीडियो और तस्वीरों के कारण कुछ लोगों को काफी नुकसान उठाना पड़ा है। उन्होंने हाल-फिलहाल में वायरल हुए कई डीपफेक वीडियो का उदाहरण देते इन्हें पहचानने के तरीके बताए। उन्होंने कहा कि ऐसे वीडियो में लिपसिंक देखकर या शरीर के हावभाव देखकर इनके डीपफेक होने के बारे में अंदाजा लगाया जा सकता है। डीपफेक तस्वीरों को पहचानने के लिए कुछ एआई टूल्स मौजूद हैं।

आधार के फेर में उलझ सकते हैं तीन जिलों के 16 लाख लोग, नहीं मिलेगा इस सेवा का लाभ

पिछले एक वर्ष में महज 12 हजार 96 लोगों ने ही ईएसआइसी कार्ड को आधार से लिंक कराया है। आधार लिंक नहीं कराने वाले लोगों को गाजियाबाद के ईएसआइसी अस्पताल से बिना इलाज के लौटाया जा रहा है। कार्डधारकों पर परिवार के 12 लाख से अधिक लोग आश्रित हैं। ऐसे में ईएसआइसी लाभार्थियों की संख्या 16 लाख हो जाती है।

साहिबाबाद। गाजियाबाद, हापुड़ और बुलंदशहर के कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआइसी) कार्ड धारक और उन पर आश्रित सहित 16 लाख से अधिक लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित रहना पड़ सकता है।

आधार को ईएसआइसी कार्ड से नहीं कराया लिंक

पिछले एक वर्ष में महज 12 हजार 96 लोगों ने ही ईएसआइसी कार्ड को आधार से लिंक कराया है। यही वजह है कि आधार लिंक नहीं कराने वाले लोगों को ईएसआइसी अस्पताल साहिबाबाद से बिना इलाज के लौटाया जा रहा है। इलाज में फर्जीवाड़ा रोकने के लिए आधार लिंक करने की शुरुआत की गई थी।

साहिबाबाद ईएसआइसी अस्पताल में गाजियाबाद, हापुड़ और बुलंदशहर जिले के चार लाख से अधिक लोग पंजीकृत हैं। कार्डधारकों पर परिवार के 12 लाख से अधिक लोग आश्रित हैं। ऐसे में ईएसआइसी लाभार्थियों की संख्या 16 लाख हो जाती है।

परिचित भी लेते थे योजना का फर्जी लाभ

कंपनी द्वारा कार्डधारकों की ईएसआइसी का पैसा भी काटती है। बदले में उन्हें यह स्वास्थ्य सुविधा मिलती है। कुछ कंपनी के लोग फर्जी ईएसआइसी कार्ड बनवा लेते हैं। संपन्न होने के बाद भी वह योजना का लाभ लेते थे। इसी तरह कार्डधारक का परिचित भी इस योजना का फर्जी लाभ लेते थे। इससे अस्पताल में भीड़ बढ़ जाती थी।

कार्डधारकों को इलाज में दिक्कत होती थी। इस फर्जीवाड़े को रोकने के लिए ईएसआइसी कार्ड से आधार कार्ड को लिंक करने की शुरूआत की गई। लिंक कराने के लिए कार्डधारकों को कई बार चेताया गया गया। इसके बाद भी पिछले एक वर्ष में महज 12 हजार 96 हजार लोग ही कार्ड लिंक करा पाए हैं। जबकि अस्पताल में कार्ड लिंक कराने के लिए अलग से काउंटर खुला है।

आधार कार्ड लिंक नहीं होने पर इलाज बंद कर दिया है। पिछले एक सप्ताह से आधार कार्ड लिंक नहीं होने वाले मरीजों को बिना इलाज के लौटाया जा रहा हैं। आधार लिंक नहीं होने की वजह से 16 लाख लोग स्वास्थ्य सुविधा से वंचित रह सकते हैं। सोमवार को भी 62 लोगों को आधार लिंक नहीं कराने पर लौटाया गया।

ऐसे करा सकते हैं आधार कार्ड लिंक

अस्पताल में इलाज कराने के लिए ईएसआइसी कार्ड के साथ आधार कार्ड भी लेकर जाएं। यदि आधार लिंक नहीं है तो अस्पताल में निश्शुल्क उसे लिंक कर दिया जाएगा।

आप घर बैठे भी आधार लिंक कर सकते हैं। इसके लिए आपको गूगल प्ले स्टोर से एएए नाम का एप मोबाइल में इंस्टाल करना होगा। इस एप के जरिये कार्ड को आधार को ईएसआइसी कार्ड से लिंक कर सकते हैं।

हमारा आधार कार्ड ईएसआइसी कार्ड से लिंक नहीं है। इलाज के लिए अस्पताल में अधिकारियों से अनुमति लेने का प्रयास कर रही हूं।

खालिस्तानियों का चुनाव लडऩा, स्वागत और सतर्कता दोनों जरूरी

असल में खालिस्तान एक विकृत सोच है जिसका जन्म विदेशी पोषण और सिख पंथ की मनमाफिक व्याख्या के अवैध सम्बन्धों से हुआ। इस सोच से न केवल पंजाब में हजारों की संख्या में निर्दोषों को जान गंवानी पड़ी बल्कि देश-विदेश में सिखों की छवि को आघात भी पहुंचा।...

लोकसभा चुनावों के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत असम की डिब्रूगढ़ जेल में बन्द खालिस्तानी अलगाववादी अमृतपाल के खडूर साहिब से नामांकन पत्र दाखिल करने की देशभर में चर्चा है। अमृतपाल दिल्ली की सीमा पर चले किसान आंदोलन के एक नेता दीप सिद्धू के अलगाववादी संगठन 'वारिस पंजाब दे' का सर्वेसर्वा है और यह पद उसने सिद्धू की सडक़ दुर्घटना में हुई मौत के बाद प्राप्त किया। अमृतपाल ने कई महीनों तक इस संगठन के मंच से सिख युवाओं के मनों में खालिस्तानी व अलगाववादी विष भरा परन्तु अजनाला में थाने पर हमले के आरोप में उसे साथियों सहित गिरफ्तार कर डिब्रूगढ़ जेल भेज दिया गया। केवल अमृतपाल ही नहीं अमृतसर में शिवसेना के नेता सुधीर सूरी की हत्या करने वाला संदीप सिंह, दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के हत्यारे बेअंत सिंह का बेटा सरबजीत सिंह खालसा भी इस चुनाव में ताल ठोक चुके हैं। इसी वर्ग में शामिल अपने भडक़ाऊ भाषणों के चलते चर्चा में रहने वाले अकाली दल (अमृतसर) के अध्यक्ष सिमरनजीत सिंह मान खुद संगरूर की सीट से चुनाव लड़ रहे हैं और वे वहां से वर्तमान सांसद भी हैं। उनके दल के अन्य उम्मीदवार खुशहाल सिंह मान, बलदेव सिंह, अमृतपाल सिंह चंद्रा, मनिन्द्रपाल सिंह क्रमशः आनन्दपुर साहिब, फरीदकोट, लुधियाना व पटियाला से चुनाव मैदान में हैं। पूर्व आईपीएस अधिकारी सिमरनजीत मान खालिस्तान के पक्ष में केवल अपने देश में ही नहीं बल्कि दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में भारत के खिलाफ विषवमन करते रहे हैं। आखिर इतने सारे खालिस्तानी अलगाववादियों का चुनाव लडऩा किस बात का संकेत है? क्या यह खालिस्तानी आतंक की वैचारिक पराजय है या अलगाववादियों की नई कोई रणनीति। इसीलिए जहां इसका स्वागत किया जाना बनता है वहीं सावधान रहने की भी अत्यन्त आवश्यकता है।

असल में खालिस्तान एक विकृत सोच है जिसका जन्म विदेशी पोषण और सिख पंथ की मनमाफिक व्याख्या के अवैध सम्बन्धों से हुआ। इस सोच से न केवल पंजाब में हजारों की संख्या में निर्दोषों को जान गंवानी पड़ी बल्कि देश-विदेश में सिखों की छवि को आघात भी पहुंचा। किसी समय विकास की दौड़ में देश में सबसे आगे दौड़ता दिख रहा पंजाब दो दशकों चले आतंकवाद के दौर में हांफने लगा। खालिस्तान पंजाब के सीने पर ऐसे जख्म का नाम बन चुका है जो रह-रह कर रिसना शुरू कर देता है।

चाहे पंजाब के अलगाववादी चुनाव तो लड़ रहे हैं परन्तु अभी तक ये तत्व भारतीय संविधान व यहां के दस्तावेजों को नकारते रहे हैं। अमृतपाल तो यहां तक कहता रहा है कि उसके लिए भारतीय पासपोर्ट तो केवल हवाई यात्रा का दस्तावेज मात्र है। देश की एकता-अखण्डता व सम्प्रभुता को चुनौती देने वाले खालिस्तानी अगर भारतीय संविधान की मर्यादा के अन्तर्गत चुनाव लड़ते हैं तो इस परिवर्तन का स्वागत होना चाहिए। भारतीय संविधान की परिधि में रह कर अलगाववादी तत्व संसद में कुछ भी मांग उठाते हैं तो इसका स्वागत होना चाहिए। स्वागत इसलिए क्योंकि यह भारतीय सार्वभौमिकता और लोकतंत्र की जीत और खालिस्तानी अलगाववाद की सैद्धान्तिक पराजय होगी।

ऐसा नहीं कि देश में किसी अलगाववादी संगठन या व्यक्ति ने पहली बार चुनाव लड़ा हो या इस तरह के संगठनों से सरकारों ने समझौते न किए हों। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में ही असम में सक्रिय आतंकी संगठन यूनाइटेड लिब्रेशन फ्रण्ट आफ असम (उल्फा),

> “ असल में खालिस्तान एक विकृत सोच है जिसका जन्म विदेशी पोषण और सिख पंथ की मनमाफिक व्याख्या के अवैध सम्बन्धों से हुआ। इस सोच से न केवल पंजाब में हजारों की संख्या में निर्दोषों को जान गंवानी पड़ी बल्कि देश-विदेश में सिखों की छवि को आघात भी पहुंचा। किसी समय विकास की दौड़ में देश में सबसे आगे दौड़ता दिख रहा पंजाब दो दशकों चले आतंकवाद के दौर में हांफने लगा।

नागालैण्ड में सक्रिय रहे अलगाववादी संगठन नार्थ ईस्ट सोस्लिट आफ नागालैण्ड (एनएससीएन), पिपुल्स डेमोक्रेटिक साउंसिल आफ कार्बी, कार्बी, लॉंगरी नोर्थ ईस्ट हिल्स लिब्रेशन फ्रण्ट, कार्बी पिपुल्स लिब्रेशन फ्रण्ट, कुकी लिब्रेशन फ्रण्ट, यूनाइटिड पुपिल्स लिब्रेशन फ्रण्ट सहित अनेक आतंकी व अलगाववादी संगठन विभिन्न समझौतों के तहत देश की मुख्यधारा में शामिल हो चुके हैं। पूर्वोत्तर ही क्यों खुद पंजाब व जम्मू-कश्मीर में बहुत से पूर्व आतंकियों का भी प्रत्यक्ष व गुप्त रूप से पुनर्वास किया जा चुका है। अगर अलगाव व आतंक का मार्ग छोड़ कर कोई भटका हुआ नागरिक देश की मुख्यधारा में शामिल होना चाहे तो उसका स्वागत होना चाहिए। इस मार्ग पर चलने वालों को यह भान भी होना चाहिए कि आतंकवाद का मार्ग किसी समस्या का समाधान नहीं, यह देश विभिन्न विचारधाराओं, विविध आस्थाओं का पुष्पगुच्छ है, हां पर किसी को हिंसा व देश को तोडऩे का अधिकार नहीं दिया जा सकता। देश को तोडऩे की बात करने वालों को पहले भारत से टूट कर अलग हुए पाकिस्तान, बंगलादेश, अफगानिस्तान, म्यांमार की हालत देखनी चाहिए कि वहां के लोग किस तरह नारकीय जीवन व्यतीत करने को विवश हैं।

इस मामले में सतर्क रहने की भी आवश्यकता है, क्योंकि कहीं चुनावों के माध्यम से अलगाववादी व आतंकी शक्तियां एकजुट होने का प्रयास करती हैं तो इसे सफल नहीं होने देना चाहिए। सांसद सिमरनजीत मान इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं, वो संसद में संविधान की शपथ भी लेते हैं और देश को तोडऩे का भी सपना देखते हैं। हाल ही में उन्होंने सार्वजनिक तौर पर कहा था कि वे खालिस्तानी तत्वों को विदेश में शरण दिलवाने का काम करते हैं। वे अब तक पचास हजार खालिस्तानी तत्वों को विदेश में राजनीतिक शरण दिलवा चुके हैं और हर केस के पैंतीस हजार रूपये की फीस लेते हैं। सांसद बनने के बाद अगर खालिस्तानी अपने पद का दुरुपयोग करते हैं और विदेशों में भारत को बदनाम करते हैं तो इसको भी रोका जाना चाहिए। ज्ञात रहे कि जब कोई भारतीय सांसद अपने लैटरहैड पर किसी खालिस्तानी तत्व को पीड़ित बताता है और भारत से उसकी जान का खतरा बताता है तो इससे इस की पुष्टि हो जाती है कि भारत में यह लोग सुरक्षित नहीं। पंजाब में लोग येन, केन प्रकारेण विदेश जाने को ललायित रहते हैं और वे इस तरह के झूठे लैटरहैडों से भी परहेज नहीं करते। ऐसा करते हुए शार्टकट से विदेश जाने के चाहवान भूल जाते हैं कि उनके इस कदम से देश की कितनी बदनामी होती है। देशविरोधी शक्तियों के कुप्रचार को कितना प्रोत्साहन मिलता है? इसलिए पंजाब के अलगाववादियों के चुनाव लडऩे के मामले को पूरी सतर्कता से लेने की जरूरत है।

नए अवतार में जल्द हो सकती है एमजी एस्टर की एंट्री, टेस्टिंग से दौरान नजर आई कॉम्पैक्ट एसयूवी

MG VS SUV की तस्वीरें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर खूब शेयर की गई हैं। इंडोनेशिया और थाईलैंड जैसे बाजारों में बेची जाने वाली इस एसयूवी को दो साल पहले लॉन्च किया गया था। यह 1.5-लीटर 4-सिलेंडर पेट्रोल इंजन से लैस है जो भारत में एस्टर के साथ पेश किए जाने वाले इंजन जितना ही शक्तिशाली है। एमजी वीएस एसयूवी एक स्पोर्टी फ्रंट फेस के

नई दिल्ली। MG Motor जल्द ही भारत में Astor compact SUV का फेसलिफ्ट वर्जन लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। लॉन्च से पहले कार निर्माता की एक नई एसयूवी देखी गई है। ये एसयूवी मूल रूप से Astor पर आधारित है, लेकिन हाइब्रिड पावरट्रेन पर चलती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक आने वाली एस्टर में हाइब्रिड ऑप्शन भी हो सकता है।

MG VS SUV में क्या खास?

MG VS SUV की तस्वीरें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर खूब शेयर की गई हैं। इंडोनेशिया और थाईलैंड जैसे बाजारों में बेची जाने वाली इस एसयूवी को दो साल पहले लॉन्च किया गया था। यह 1.5-लीटर 4-सिलेंडर पेट्रोल इंजन से लैस है, जो भारत में एस्टर के साथ पेश किए जाने वाले इंजन जितना ही शक्तिशाली है।

2.13 kWh लिथियम-आयन बैटरी के साथ, इंजन लगभग 175 bhp की पावर और 142 Nm का पीक टॉर्क जेनरेट कर सकता है। ट्रांसमिशन का काम ई-सीवीटी गियरबॉक्स द्वारा किया जाता है। एमजी मोटर ने पहले घोषणा की थी कि वह भारत में प्लग-इन हाइब्रिड वाहन पेश करने की योजना बना रही है।

डिजाइन और इंटीरियर

डिजाइन के मामले में एमजी वीएस एसयूवी एक स्पोर्टी फ्रंट फेस के साथ आती है, जिसमें स्लीक एलईडी हेडलाइट और डीआरएल यूनिट, एक क्लोज्ड ग्रिल और बड़े एयर इनटेक हैं। साइड में अलॉय डिजाइन एस्टर से थोड़े अलग हैं। इनमें से कुछ डिजाइन एलीमेंट को एस्टर फेसलिफ्ट पर भी आगे बढ़ाए जाने की उम्मीद है। आगामी एस्टर फेसलिफ्ट के इंटीरियर में भी डुअल डिस्प्ले, नया गियर लीवर, नया स्टीयरिंग व्हील सेटअप और अतिरिक्त फीचर्स जैसे बदलाव होने की संभावना है।

कंपनी की फ्यूचर प्लानिंग

कुछ दिन पहले ही एमजी मोटर ने कहा था कि वह जल्द ही अपनी पहली प्लग-इन हाइब्रिड कार पेश करने की योजना बना रही है। JSW एमजी मोटर इंडिया ने आने वाले दिनों में इलेक्ट्रिक कारों और हाइब्रिड वाहनों जैसे नए ऊर्जा वाहनों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की अपनी योजना स्पष्ट की। हाइब्रिड पावरट्रेन के साथ एस्टर फेसलिफ्ट उस दिशा में पहला कदम हो सकता है।

गर्मी में कार चलाते समय आप भी तो नहीं कर रहे ये गलतियां, एक्सपर्ट से जानिए टेंशन फ्री ड्राइविंग टिप्स

समर ड्राइविंग उनके लिए ज्यादा चैलेंजिंग है जिन्हे नियमित रूप से वाहन चलाना पड़ता है। दिक्कतों को समझने के लिए हमने कुछ कैब ड्राइवरों से बात की। तपती गर्मी में कार ड्राइव करते समय किन चीजों का ध्यान रखना चाहिए इसको लेकर हमने काफी जानकारी जुटाई है। आइए पेशेवरों से मिले कुछ उपयोगी सुझावों के साथ-साथ एक्सपर्ट टिप्स भी जान लेते हैं।

नई दिल्ली। गर्मियों में ड्राइविंग करना काफी मुश्किल हो जाता है। अत्यधिक तापमान से लेकर अप्रत्याशित ट्रैफिक जाम तक, भरी धूप में कार चलाना चुनौतीपूर्ण है। इस समस्या का सामना करने के लिए हम कुछ महत्वपूर्ण जानकारी लेकर आए हैं।

तपती गर्मी में कार ड्राइव करते समय किन चीजों का ध्यान रखना चाहिए, इसको लेकर हमने काफी जानकारी जुटाई है। आइए, पेशेवरों से मिले कुछ उपयोगी सुझावों के साथ-साथ एक्सपर्ट टिप्स भी जान लेते हैं।

जर्नी प्लान करें

यात्रा शुरू करने से पहले वेदर फोरकास्ट और ट्रैफिक की जानकारी जुटाएं। ऐसा रूट चुनें, जहां सड़क किनारे पेड़- पौधे और छाया का इंतजाम हो। खराब मौसम, दुर्घटनाओं या अन्य कारकों की वजह से सड़क की स्थिति कई बार बदल जाती है, इसलिए ये जानना जरूरी है कि आप जहां जा रहे हैं उधर कैसा रास्ता होगा।

गाड़ी तैयार करें

ट्रिप शुरू करने से पहले यह सुनिश्चित करना कि आपके टायरों ठीक से हवा भरी हुई है और ऑयल लेवल ठीक है। सही टायर प्रेशर और ऑयल लेवल न केवल एक स्मूद और सेफ ड्राइविंग सुनिश्चित करेगा, बल्कि यह आपकी गाड़ी की लाइफ भी बढ़ाएगा। इन बेसिक मेंटेनेंस टिप्स से आपकी कार बीच रास्ते में बंद होने से बची रहेगी।

जरूरी चीजें साथ रखें

गर्मियों में कार ड्राइव करते समय आपके पास कुछ आवश्यक चीजें होनी चाहिए। इनमें पानी की बोतल, ओआरएस जैसे ठंडे पेय पदार्थ और सनग्लास शामिल हैं। इसके अलावा आप पसीना साफ करने के लिए वेट वाइप और टॉवेल भी रख सकते हैं। कार में जाने से पहले धूप से बचने का चश्मा और सनस्क्रीन जरूर लें।

इंजन चेक करते रहें

दमघोंटू गर्मी में इंजन का काम काफी मुश्किल हो जाता है। अगर आपको लगता है कि आपकी गाड़ी ज़्यादा गर्म होने लगी है, तो सुरक्षित जगह पर गाड़ी को रोक दें और रेडिएटर की जांच करने से पहले उसे ठंडा होने दें। कई बार कम कूलेंट लेवल की वजह से भी इंजन जल्दी गर्म होने लगता है।

गाड़ी को छाया में रखें

सूर्य की किरणें आपकी त्वचा के लिए हानिकारक हो सकती हैं। इसके अलावा सनलाइट से कार के इंटीरियर को भी नुकसान पहुंचता है। पेंट और इंटीरियर फैब्रिक के रंग उड़ने से बचाने के लिए इसे किसी छायादार जगह या गैरेज जैसी किसी सुरक्षित जगह पर पार्क करें। इसके अलावा सनशेड लगाना न भूलें।

एक्सपर्ट की राय

समर ड्राइविंग को लेकर हमने सीनियर ऑटो जर्नलिस्ट गौरव यादव से बात की। उन्होंने कहा कि गर्मियों में कार के चारों टायर्स को एक्स्ट्रा केयर की जरूरत होती है। इसके अलावा टायर पंचर जैसी स्थिति का सामना करने के लिए वे स्पेयर व्हील साथ रखने का सुझाव देते हैं।

पेशेवरों ने क्या कहा?

समर ड्राइविंग उनके लिए ज्यादा चैलेंजिंग है, जिन्हे नियमित रूप से वाहन चलाना पड़ता है। दिक्कतों को समझने के लिए हमने कुछ कैब ड्राइवरों से बात की। पेशेवरों ड्राइवरों ने गर्मी से बचने के कुछ देसी जुगाड़ सुझाए। उन्होंने बताया कि पानी ठंडा रखने के लिए उसे एसी वेंट्स के सामने रख देते हैं और ऐसी बंद होने पर गाड़ी छांव में पार्क करके विंडो खोल देते हैं।

केटीएम 200 ड्यूक और 250 ड्यूक को मिले नए कलर ऑप्शन, प्राइस के साथ जानिए पहले से कितनी बदल गईं ये बाइक्स

नई कलर स्कीम की शुरुआत पर बजाज ऑटो लिमिटेड के अध्यक्ष (प्रोबाइकिंग) श्री सुमीत नारंग ने कहा कि KTM DUKE इंजीनियरिंग के शिखर का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी श्रेणी से आगे है। 200 ड्यूक 200 सीसी सेगमेंट में सबसे लोकप्रिय मोटरसाइकिलों में से एक रही है। 2023 में इसे एक नए एलईडी हेडलैंप के साथ अपडेट किया गया था।

नई दिल्ली। KTM India ने 200 Duke और 250 Duke के लिए नई कलर स्कीम लॉन्च की है। 200 Duke के लिए दो नए रंग- इलेक्ट्रॉनिक ऑरेंज और डार्क गैल्वेनो, जबकि 250 Duke के लिए नई अटलांटिक ब्लू कलर स्कीम पेश की गई है।

KTM 200 Duke और 250 Duke की कीमत

नई कलर स्कीम के अलावा, KTM ने मोटरसाइकिल में कोई बदलाव नहीं किया है। 250 Duke की एक्स-शोरूम कीमत 2.40 लाख रुपये है, जबकि 200 Duke की एक्स-शोरूम कीमत 1.97 लाख रुपये है।

नई कलर स्कीम की शुरुआत पर, बजाज ऑटो लिमिटेड के अध्यक्ष (प्रोबाइकिंग) श्री सुमीत नारंग ने कहा कि KTM DUKE इंजीनियरिंग के शिखर का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपनी श्रेणी से आगे है। इसे राइडर की असली क्षमता को उजागर करने के लिए तैयार किया गया है। इसे रेडी टू रेस की भावना के साथ निर्मित किया गया है। उन्होंने कहा कि हमने कई विकल्प प्रदान करते हुए नए रंग जोड़े हैं।

इंजन और स्पेसिफिकेशन

200 ड्यूक 200 सीसी सेगमेंट में सबसे लोकप्रिय मोटरसाइकिलों में से एक रही है। 2023 में इसे एक नए एलईडी हेडलैंप के साथ अपडेट किया गया था। इंजन में कोई बदलाव नहीं किया गया था, बस इसे बीएस6 स्टेज 2 स्टैंडर्ड के अनुरूप बनाया गया था।

ये इंजन 24.68 बीएचपी और 19.3 एनएम का पीक टॉर्क देता है। इसे 6-स्पीड गियरबॉक्स यूनिट दिया गया है। ड्यूक 250 में 249 सीसी, लिक्विड-कूल्ड इंजन दिया गया है। इसे ग्राउंड-अप से डेवलप किया गया है। यह 30.57 बीएचपी की शक्ति और 25 एनएम का टॉर्क आउटपुट देता है।

सात सीटर एमपीवी सेगमेंट में जल्द आएगी किआ की यह गाड़ी, टोयोटा इनोवा को मिलेगी कड़ी चुनौती

परिवहन विशेष न्यूज

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक Toyota Innova को टक्कर देने के लिए Kia की ओर से जल्द ही सात सीटों के विकल्प के साथ नई MPV को भारतीय बाजार में लॉन्च किया जा सकता है। कंपनी की ओर से किस एसयूवी को किस तरह के खास फीचर्स और कितने दमदार इंजन के साथ लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में सात सीटों की एमपीवी सेगमेंट में मुकाबला और ज्यादा हो सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक Toyota Innova को टक्कर देने के लिए जल्द ही Kia की ओर से नई एमपीवी को लॉन्च किया जा सकता है। कंपनी की ओर से किस एमपीवी को लाया जा सकता है, इसमें किस तरह के फीचर्स और इंजन को दिया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Kia लाएगी यह MPV

किआ मोटर्स की ओर से भारत में जल्द ही नई सात सीटों वाली एमपीवी के तौर पर कार्निवल को लाने की तैयारी की जा रही है। कंपनी की इस एमपीवी को साल 2023 में हुए ऑटो एक्सपो में भी शोकेस किया जा चुका है। इसके अलावा कंपनी ने कुछ समय पहले ग्लोबल बाजार में भी इस एमपीवी के एक्सटीरियर को दिखाया गया है।

हो रही टेस्टिंग

बाजार में लॉन्च करने से पहले कंपनी की ओर से इस लग्जरी एमपीवी की टेस्टिंग की जा रही है। भारत के साथ ही कई और देशों में भी इसे टेस्टिंग के दौरान कई बार देखा जा चुका है। चौथी पीढ़ी की इस एमपीवी में कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जा सकता है।

कैसा होगा डिजाइन

जानकारी के मुताबिक नई एमपीवी में कंपनी की ओर से बड़ी टाइगर नोज फ्रंट ग्रिल को दिया जाएगा। जिसके साथ क्रोम का उपयोग किया गया है। इसके अलावा इसमें वर्टिकल एलईडी लाइट्स और एल शेप एलईडी डीआरएल को भी दिया गया है। एमपीवी में ब्लैक क्लैडिंग और फ्रंट बंपर पर ADAS सेंसर को दिया गया है।

कैसे होंगे फीचर्स

फिलहाल इसके इंटीरियर की जानकारी कंपनी की ओर से सार्वजनिक नहीं की गई है। लेकिन इसके इंटीरियर को पुरानी जेनरेशन के मुकाबले कई बदलावों के साथ लाया जाएगा। इसके इंटीरियर में डैशबोर्ड, इंफोटेनमेंट सिस्टम और डिजिटल क्लस्टर में बदलाव के साथ ही कई नए फीचर्स को भी दिया जा सकता है। जिसमें ड्यूल स्क्रीन सेट-अप, नई और बेहतर सीटें और स्टेयरिंग शामिल हैं।

कितना दमदार होगा इंजन

किआ की ओर से नई जेनरेशन कार्निवल (Kia Carnival) में 2.2 लीटर का डीजल इंजन दिया जा सकता है। इसके अलावा इसमें 3.5 लीटर के वी6 पेट्रोल इंजन का विकल्प भी मिल सकता है। इसके 2.2 लीटर डीजल इंजन से 200 बीएचपी और 440 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा और इसमें 8स्पीड एटी ट्रांसमिशन को दिया जा सकता है।

कब होगी लॉन्च

कंपनी की ओर से इसके लॉन्च को लेकर किसी भी तरह की जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसे इस साल के आखिर या अगले साल की शुरूआत में लॉन्च किया जा सकता है। लॉन्च के समय इसकी कीमत करीब 35 लाख रुपये के आसपास हो सकती है और बाजार में इसका सीधा मुकाबला टोयोटा की इनोवा से होगा।

भारत में जनसंख्या असंतुलन की समस्या

डा. अश्विनी महाजन
कालेज एसोशिएट प्रोफेसर

हमारी आबादी, विशेष रूप से मुस्लिम आबादी को शैक्षिक रूप से उन्नत करने की तत्काल आवश्यकता है। इससे कुल प्रजनन दर और इसलिए जनसंख्या वृद्धि दर को कम करने में मदद मिल सकती है‘

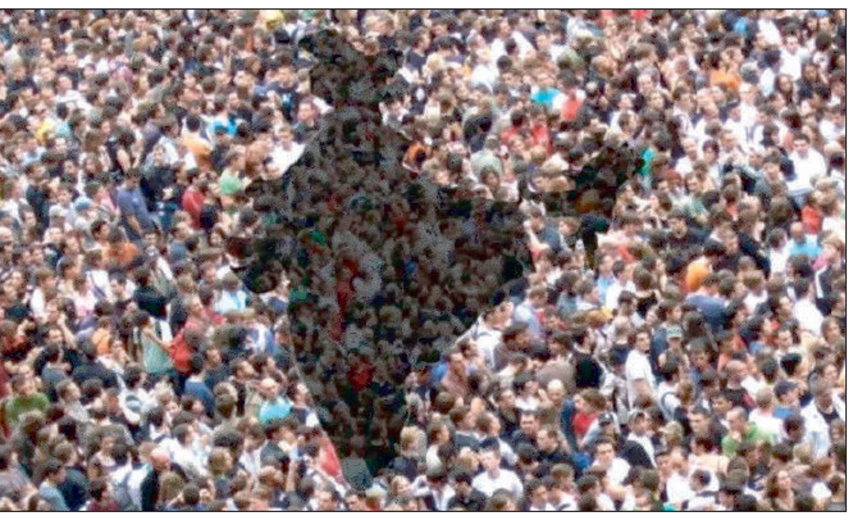

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (पीएमईएसी) द्वारा हाल ही में जारी की गई रिपोर्ट के अनुसार 1950 से लेकर 2015 तक कुल जनसंख्या में बहुसंख्यक हिंदू आबादी की हिस्सेदारी में 7.82 प्रतिशत की कमी आई है, जबकि मुस्लिम आबादी की हिस्सेदारी में 43.15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि कई अन्य देशों में भी, जहां बहुसंख्यक आबादी गैर-मुस्लिम थी, उसकी हिस्सेदारी में कमी आई है और अल्पसंख्यक आबादी जो मुस्लिम है, की हिस्सेदारी बढ़ी है। यह प्रवृत्ति म्यांमार और नेपाल में भी देखी गई। पाकिस्तान और बांग्लादेश में जहां मुस्लिम खुद बहुसंख्यक हैं, उनकी हिस्सेदारी बढ़ी है। यानी सवाल अल्पसंख्यकों की आबादी बढने का नहीं, बल्कि दुनिया में मुस्लिम आबादी बढने का है, जिसका असर यूरोप समेत दुनिया के अधिकांश देशों में देखा जा रहा है। अगर बात सिर्फ भारत की करें तो जहां 1950 में हिंदुओं की आबादी का हिस्सा 84.68 प्रतिशत था, वो 2015 तक घटकर सिर्फ 78.06 प्रतिशत रह गया, जबकि इसी दौरान मुस्लिम आबादी का हिस्सा 1950 में 9.84 प्रतिशत से बढक़र 2015 में 14.09 प्रतिशत हो गया। गौरतलब है कि भारत की कुल जनसंख्या 1951 में 36.1 करोड़ से बढक़र 2015 में 132.29 करोड़ हो गई और इसी तरह हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई समेत सभी समुदायों की आबादी में भी बढ़ोतरी हुई है। लेकिन खास बात यह है कि मुस्लिम आबादी की वृद्धि दर अन्य सभी जातीय समूहों से ज्यादा रही है। जबकि, हिंदू आबादी 1951 में 30.57 करोड़ से बढक़र 2001 में 82.75 करोड़ हुई (यानी 2.0 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर), मुस्लिम आबादी 3.55 करोड़ से बढक़र 13.8 करोड़ हो गई (2.75 प्रतिशत की भारी वार्षिक वृद्धि दर), सिखों की जनसंख्या 0.69 करोड़ से बढक़र 1.94 करोड़ हो गई और ईसाइयों की जनसंख्या 0.83 करोड़ से बढक़र 2.41 करोड़ हो गई, यानी 50 वर्षों में क्रमशः 2.09 प्रतिशत और 2.15 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर।

कुछ लोगों का तर्क है कि पिछले दो दशकों में मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि की गति धीमी हो गई है। हालांकि, यह सच है कि 2001 से 2015 के बीच विभिन्न जातीय समूहों की जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट आई है, लेकिन मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि अभी भी अन्य धार्मिक समूहों से बहुत आगे है। हम देखते हैं कि वर्ष 2001 और 2015 के बीच हिंदुओं, मुसलमानों, सिखों और ईसाइयों की जनसंख्या वृद्धि दर क्रमशः 1.61, 2.17, 1.68 और 1.82 रही। इस रिपोर्ट से सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में यह नैरेटिव फैलाया जा रहा है कि भारत में अल्पसंख्यकों, खास तौर पर मुसलमानों को दबाया और सताया जाता है, लेकिन आंकड़े इस नैरेटिव को पूरी तरह से नकारते हैं।

भारत की जनसांख्यिकी में सामान्य परिवर्तन : गौरतलब है कि भारत में 1951 में कुल प्रजनन दर 5.9 थी, जो 1981 में घटकर 4.80 और 2011 में 2.56 हो गई। हाल ही में आए आंकड़ों के अनुसार 2024 में भारत में कुल प्रजनन दर 2.12 तक पहुंच गई है। गौरतलब है कि जनसांख्यिकी सिद्धांत के अनुसार जब किसी देश की कुल प्रजनन दर 2.1 से नीचे गिरती है, तो उस देश की जनसंख्या कुछ समय बाद घटने लगती है। इसलिए प्रजनन दर का 2.12 तक पहुंचना जनसंख्या के लिए खतरे की घंटी है। पिछले कुछ समय से भारत में कुल प्रजनन दर में लगातार गिरावट के कारण अब यह स्पष्ट होता जा रहा है कि हम ऐसी स्थिति में पहुंच चुके हैं, जहां से कुछ समय बाद वास्तविक जनसंख्या में कमी आनी शुरू हो जाएगी। गौरतलब है कि चीन में ऐसी स्थिति पहले ही आ चुकी है। यूरोप के कई देश भी इसी स्थिति से गुजर रहे हैं। अफ्रीका के बाद भारत भी उन चंद देशों में शामिल है, जहां जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, लेकिन अब भारत में भी जनसंख्या में कमी आने की आशंका जताई जा रही है। लेकिन ऐसे में पीएमईएसी की रिपोर्ट यह भी संकेत देती है कि भले ही आने वाले समय में कुल जनसंख्या में कमी आएगी, लेकिन उसमें भी हिंदुओं की जनसंख्या, जो पहले से ही आनुपातिक रूप से कम हो रही है, इसमें निरपेक्ष रूप में भी कमी होनी शुरू हो सकती है, जबकि मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि जारी रहेगी। हम कह सकते हैं कि हिंदू जनसंख्या के नुकसान की भरपाई मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि से होगी।

शिक्षित वर्ग की जनसंख्या में गिरावट की संभावना : जनगणना और अन्य रिपोर्टों से पता चलता है कि निरक्षर और कम शिक्षित महिलाओं में कुल प्रजनन दर 2011 में 3.17 रही। लेकिन स्नातक या उससे ऊपर की महिलाओं में प्रजनन दर जो 1991 में 1.62 थी, 2011 में घटकर 1.40 रह गई और अभी भी इसमें और गिरावट की पूरी संभावना है। इसी तरह, स्नातक से कम शिक्षित अन्य महिलाओं में भी प्रजनन दर अपेक्षाकृत कम होती है। यदि हम शिक्षा के मामले में विभिन्न धार्मिक समूहों की तुलना करें, तो यह स्पष्ट है कि मुस्लिम समुदाय अभी भी हिंदुओं की तुलना में कहीं अधिक पिछड़ा हुआ है और इसलिए संभावना है कि मुस्लिम आबादी में वृद्धि जारी रहेगी, जबकि हिंदू आबादी में गिरावट आ सकती है। उल्लेखनीय है कि 2001 की जनगणना के अनुसार हिंदुओं में साक्षरता दर 65.8 प्रतिशत थी, जबकि मुसलमानों में यह केवल 59.1 प्रतिशत थी। अगर हम उच्च शिक्षा की बात करें तो हम देखते हैं कि 2001 में 18 से 25 वर्ष की आयु वर्ग में मुस्लिम समुदाय में स्नातक और अधिक शिक्षित लोगों की संख्या केवल 6.7 प्रतिशत थी, जबकि हिंदुओं में यह 12.5 प्रतिशत थी। शिक्षा और कुल प्रजनन दर के बीच संबंधों को देखते हुए, हम सहज रूप से कह सकते हैं कि कम शिक्षित मुस्लिम महिलाएं अधिक बच्चों को जन्म देती हैं, जबकि अधिक शिक्षित महिलाओं में प्रजनन दर कम होती है। यानी मुस्लिम आबादी में वृद्धि और हिंदू आबादी में कमी को हिंदुओं और मुसलमानों के बीच शिक्षा के स्तर में अंतर से भी समझाया जा सकता है।

संतुलन कैसे लाया जाए : एक आम धारणा है कि मुसलमान अपनी परंपराओं, दर्शन और धार्मिक मान्यताओं के कारण बड़े परिवार रखते हैं। अतीत में गरीब हिंदू भी यह मानते थे कि बच्चे भगवान की देन हैं, लेकिन अधिकांश मुसलमान अपने आर्थिक और शैक्षिक पिछड़ेपन के कारण अभी भी उसी पर विश्वास करते हैं (यानी बच्चे अल्लाह की देन हैं)। हमने देखा है कि आर्थिक समृद्धि, शैक्षिक विकास और चिकित्सा विज्ञान में प्रगति और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के साथ, जन्म दर, मृत्यु दर और जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर सभी में कमी आ रही है। विभिन्न धार्मिक समूहों में शैक्षिक और आर्थिक मानकों में अंतर भी विभिन्न जातीय समूहों में प्रजनन दर और जनसंख्या वृद्धि में अंतर को स्पष्ट करता है। जनसंख्या असंतुलन को ठीक करने की आवश्यकता है। जनसंख्या संतुलन के लिए निम्नलिखित कुछ सुझाव हो सकते हैं : सबसे पहले, हमारी आबादी, विशेष रूप से मुस्लिम आबादी को शैक्षिक रूप से उन्नत करने की तत्काल आवश्यकता है। इससे कुल प्रजनन दर और इसलिए जनसंख्या वृद्धि दर को कम करने में मदद मिल सकती है। दूसरा, अभी भी एक संभावना हो सकती है कि जब तक हम उच्च शिक्षा मानकों तक नहीं पहुंच जाते, या उसके बाद भी धार्मिक मान्यताओं और मनोविज्ञान के कारण जनसंख्या में वृद्धि जारी रहे, इससे निपटने के लिए हम जनसांख्यिकीय लक्ष्यों को प्राप्त करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए राजकोषीय प्रोत्साहन और हतोत्साहन का उपयोग कर सकते हैं। तीसरा, पिछले कुछ समय से जनसंख्या नीति पर बहस चल रही है। जनसंख्या संतुलन प्राप्त करने और आर्थिक, शैक्षिक तथा सामाजिक मानकों के दृष्टिकोण से भविष्य की जनसंख्या को उन्नत करने के लिए जनसंख्या नीति महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। परिवार को सीमित करने हेतु कुछ कानूनी प्रावधान भी इस दिशा में समाधान दे सकते हैं।

संपादक की कलम से

‘आलाकमान’ की फटकार

कांग्रेस आलाकमान का चरित्र और रवैया ‘सामंती सिंड्रोम’ से कम नहीं है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडग़े ने पश्चिम बंगाल के सबसे अनुभवी, दिग्गज और जनाधारी नेता अधीर रंजन चौधरी को फटकार कर खारिज कर दिया, क्योंकि उन्होंने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ टिप्पणी कर दी थी। खडग़े ने ममता की तृणमूल कांग्रेस और कांग्रेस के ‘इंडिया’ गठबंधन के साथ संबंधों की कुछ व्याख्या की और अधीर रंजन पर बोले- ‘वह फैसला लेने वाला कोई नहीं है। पार्टी आलाकमान तय करेगा।’ बंगाल के कार्यकर्ता खडग़े की चेतावनी से नाराज हो गए और कांग्रेस अध्यक्ष की तस्वीरों पर स्याही पोत दी। बंगाल में सिर्फ अधीर रंजन की ‘बहरामपुर’ सीट ही बची है, जो कांग्रेस की विजयी सूची में दर्ज है। उसके अलावा, कांग्रेस-वाममोर्चा के साझा खाते में भी ‘शून्य’ ही दर्ज है। अधीर रंजन चौधरी निवर्तमान लोकसभा में कांग्रेस संसदीय दल के नेता रहे हैं। यह पद ‘नेता प्रतिपक्ष’ के लगभग समान ही था। खडग़े भी राज्यसभा में ‘नेता प्रतिपक्ष’ हैं। दोनों ही नेता कांग्रेस की शीर्षस्थ संस्था ‘कांग्रेस कार्यसमिति’ के सदस्य हैं। यह दीगर है कि खडग़े कांग्रेस के निर्वाचित अध्यक्ष हैं, लेकिन क्या आलाकमान के मायने ये होते हैं कि आप समकक्ष नेता को बेमानी और खारिज करार दें? कांग्रेस आलाकमान की यह संस्कृति ही देश ने इस कदर खारिज की है कि पार्टी को चुनाव-प्रचार में लगातार पाखंड खेलने पड़ रहे हैं कि यदि मोदी सरकार ही तीसरी बार सत्ता में आई, तो देश का संविधान बदल दिया जाएगा। लोकतंत्र समाप्त किया जा सकता है और आम चुनाव अब कभी नहीं कराए जाएंगे। ‘एक देश, एक नेता’ का भी दुष्प्रचार किया जा रहा है। क्या दुनिया के सबसे बड़े, स्थापित लोकतांत्रिक देश भारत में ऐसी स्थितियां संभव हैं? जनता बखूबी जानती है कि ऐसे ढेरों भ्रम फैलाए जा रहे हैं। कमोबेश 4 जून को देश का जनादेश सार्वजनिक हो जाएगा। बहरहाल ममता बनर्जी ने बयान दिया था कि यदि केंद्र में गैर-भाजपा और ‘इंडिया’ गठबंधन की सरकार बनती है, तो तृणमूल कांग्रेस दिल्ली में उसे बाहर से समर्थन देगी। इस पर कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने ममता को ‘अवसरवादी नेता’ करार दिया। ममता ‘इंडिया’ गठबंधन के संस्थापकों में थीं, लेकिन पश्चिम बंगाल में ‘इंडिया’ के खिलाफ चुनाव में उतरीं। कांग्रेस-वाममोर्चा के साथ सीटों का बंटवारा नहीं हो सका, लिहाजा ममता ने अकेले ही चुनाव लडऩे की घोषणा की थी। तृणमूल कांग्रेस राज्य की सभी 42 लोकसभा सीटों पर अकेले ही चुनाव लड़ रही है। यकीनन भाजपा के खिलाफ ‘इंडिया’ को बड़ा नुकसान हुआ है। अधीर रंजन ने ममता बनर्जी को यहां तक ‘अवसरवादी’ माना है कि यदि बंगाल में भाजपा अच्छी-खासी सीटें जीत गई और केंद्र में भी भाजपा-एनडीए को बेहतर जनादेश मिल गया, तो ममता भाजपा के साथ भी जा सकती हैं। दोनों के बीच ‘घनिष्ठ संबंधों’ की तरह मिलीभगत है। ममता ने अभी जो बयान दिया था, उसके अगले दिन ही उन्होंने अपने शब्दों में संशोधन किया और कहा कि तृणमूल कांग्रेस भी ‘इंडिया’ का हिस्सा है। समग्रता में देखा जाए, तो ‘इंडिया’ के कथित घटकों के बीच, जमीनी स्तर पर, जो रूखापन, कटुता और हिंसा चुनाव के दौरान देखी गई है, उसने तमाम राजनीतिक गणनाओं को बिगाड़ दिया है। तृणमूल कांग्रेस अपने वर्चस्व के लिए राजनीति करती रही है, जबकि बंगाल में कांग्रेस और वाममोर्चा अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं।

ये तमाम स्थितियां ‘इंडिया’ गठबंधन पर सवाल करती हैं। खडग़े को भी इसका एहसास होगा। दिल्ली में गठबंधन की संभावनाएं तब पुख्ता होंगी, जब राज्य में ‘इंडिया’ का अस्तित्व संभव होगा। ‘इंडिया’ के नेताओं, खासकर कांग्रेस आलाकमान, को समझना चाहिए कि ‘बाहरी समर्थन’ या सरकार में शामिल होने का सवाल 4 जून के बाद ही उठता है। फिलहाल तो देश के मतदाताओं को विश्वास दिलाएं कि प्रधानमंत्री मोदी का वैकल्पिक चेहरा ‘इंडिया’ के पास कौनसा है? साल भर के लिए प्रधानमंत्री चुनना भारत जैसे विविध और विशाल देश के लिए व्यावहारिक नहीं है। गठबंधन स्वाभाविक होना चाहिए। मत भूलिए कि चुनाव जारी हैं और हरेक हरकत पर देश के मतदाता की नजर है।

राय

चुनाव की भाषा

चुनाव की भाषा में अमर्यादित होती परिपाटी और सियासी उच्चारण में तार-तार होता हिमाचली चरित्र। मंडी की गलियों से शुरू हुआ उम्मीदवारों का भाषायी उन्माद अंत आते-आते पूरे प्रदेश में सिरफिरा हो गया। भाषा और भाषण में अंततः राजनीतिक कंगाली का आलम यह है कि कोई विपक्ष की खिल्ली उड़ा रहा है, तो कहीं सत्ता को कोसने की शब्दावली में जहर भरा है। जो भी हो, भाषा ने हमारी चारित्रिक पहचान डुबो दी है। बावजूद इसके पहली बार हर उम्मीदवार जनता से अपने संवाद की नजदीकी के लिए, स्थानीय बोली में विमर्श पैदा करने की कोशिश में जुटा है। शुरुआती दौर में कंगना ने मंडी की बेटी बनने के लिए स्थानीय बोली में शब्द, स्थानीय पहरावे में रंग और खानपान में विविधता चुनी, तो विक्रमादित्य सिंह ने संभ्रांत उच्चारण से नीचे उतर कर स्थानीय संवाद की कशिश पैदा की। इसे आश्चर्य की दृष्टि से देखें या कांगड़ा-चंबा में कांग्रेसी उम्मीदवार आनंद शर्मा के पहाड़ी प्रयास की तारीफ करें कि इस कद्दावर नेता ने स्थानीय शब्दों को चुनाव में बिलोल दिया। पहली बार हिमाचल अपनी स्थानीयता और पहाड़ीपन की पोशाक पहने चल रहा है, तो हर उम्मीदवार से भाषायी उम्मीदें बढ़ गई हैं। चाहे केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर हों या कोई और, भाषायी सेतु पर चुनाव ने जुबान खोली है। ऐसे में चुनाव की महफिल में हिमाचल के भाषायी सरोकार सामने आ रहे हैं।

भले ही अभी बोलियों में हस्ताक्षर हो रहे हैं, लेकिन धीरे-धीरे पक रहा संवाद एक दिन हिमाचल के परिचय में संपूर्ण भाषा का महत्त्व जानेगा। ऐसे में हिमाचली भाषा के तमाम स्रोतों से लांघते लोकसभा चुनाव से यह अपेक्षा की जा सकती है कि आइंदा नेताओं की सर्वमान्यता में प्रदेश को एक प्रतिष्ठित व स्वीकार्य भाषा की जरूरत है। भले ही आज की तारीख में बघाटी, सिरमौरी, कहलूरी, कांगड़ी, चंबयाली, मंडयाली, कुल्लवी व कुछ अन्य बोलियां अपनी-अपनी सतह पर संवाद पैदा कर रही हैं, लेकिन एक दिन बोलियों से आगे निकल कर हिमाचल का स्वाभिमान अपने लिए और अपनी पहचान के लिए राज्य स्तरीय भाषा के खाके को मजबूत करेगा। कम से कम लोकसभा का वर्तमान चुनाव यह शर्त सामने रख रहा है। यह दीगर है कि बोलियों के बीच बोल बिगड़ रहे हैं।

सांस्कृतिक तौर पर भी हिमाचल को अपनी चुनावी ताकत का इजहार करते हुए यह सुनिश्चित करना होगा कि पहाड़ की अस्मिता के लिए केंद्र की सत्ता से हमारे अधिकारों की अपेक्षा क्या है। जल, जंगल और जमीन के अलावा पहाड़ की जवानी के प्रति केंद्र के सरोकार लोकसभा चुनाव में परिलक्षित होने चाहिएं। विस्थापन के कई अधूरे पन्ने और पंजाब पुनर्गठन से जुड़े हिमाचली अधिकार पुनः चुनाव में उतरे नेताओं की भाषा में आत्मसम्मान खोज रहे हैं। हिमाचल की भाषा में पंजाब पुनर्गठन से जुड़े अधिकारों का अनुवाद आज तक नहीं हुआ। हम दिल्ली से गुजारिश करते-करते लखनवी अंदाज से बाहर नहीं निकलते, जबकि सरहद पर हमारे नौजवानों की भाषा में पहाड़ी बलिदान का पूरा-पूरा शब्दकोष न जाने कब से देश स्वीकार कर चुका है। जिंदगी के हर मोड़ पर तथा राष्ट्रीय भावना के हर संयोग पर हिमाचल ने हमेशा वही अर्थ समझा जो देश की सार्वभौमिकता व अस्तित्व के लिए लाजिमी है, लेकिन प्रदेश की अपनी जरूरतों की खातिर ऐसी भाषा अस्तित्व में नहीं आई जो प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर सके। इसीलिए आनंद शर्मा को कांगड़ी व चंबियाली का शब्दकोष खोलना पड़ रहा है, तो कंगना रनौत को अपनी बुद्धिमता के प्रदर्शन के लिए मंडयाली बोली के स्कूल में प्रवेश लेना पड़ रहा है। क्या आनंद शर्मा और कंगना रनौत क्षेत्रीय बोलियों के दम पर राजधानी शिमला और दिल्ली तक अपना संदेश सुना पाएंगे।

गेम चेंजर हर्ष महाजन

वह सहज ही मित्र बना लेते हैं। राजीव गांधी ने ही उन्हें 1986 में हिमाचल युवा कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया था और लगभग एक दशक तक, यानी वर्ष 1995 तक वह इस पद पर बने रहे। अपनी वैयक्तिक खूबियों के चलते उन्होंने राजीव गांधी का दिल जीत लिया और फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा‘

कुछ राजनीतिक व्यक्तित्व हम भूल जाते हैं, कुछ याद रहते हैं और कुछ बार-बार याद आते हैं। राजनेता हर्ष महाजन राजनीतिक जगत की एक ऐसी शख्सियत बन कर उभरे हैं जो भुलाये न भूलें! विशेषकर कांग्रेस की सुक्खू सरकार को वह हमेशा याद रहेंगे। हर्ष महाजन ने एक ऐसे घटनाक्रम को अंजाम दिया जो ऐतिहासिक है। सुक्खू सरकार उनकी बिछाई राजनीतिक बिसात में उलझ कर रह गई। उनके एक मास्टर स्ट्रोक से बहुमत वाली कांग्रेस सरकार को बचाए रखने का संकट आन खड़ा हुआ। इस सारे प्रकरण पर विधानसभा के स्पीकर की भूमिका संसदीय प्रणाली को समझने वाले राजनीति विज्ञान और कानून के विद्यार्थियों के लिए भी महत्वपपूर्ण है। सरकार गिरते गिरते संभली। पर अभी उपचुनावों के बाद यह लडख़ड़ाना बंद हो पाएगी या नहीं, इस पर पर्यवेक्षकों की नजर बनी हुई है। इस सारे प्रकरण को समझने के लिए थोड़ा पीछे लिए चलते हैं। सितम्बर 2022 में अचानक खबर आती है कि कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष और पूर्व मंत्री हर्ष महाजन ने कांग्रेस को अलविदा कह दिया। कांग्रेस के लिए यह हेडलाइन बड़ा आघात था। राष्ट्रीय स्तर पर भी कोई एक महीना पहले, अगस्त 2022 में वरिष्ठ कांग्रेस नेता गुलाम नबी आजाद ने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। गुलाब नबी ने राहुल गांधी पर आरोप लगाया कि वह पार्टी के आंतरिक लोकतंत्र को और पार्टी के भीतर सलाह-मशविरे की रवायत को तहस-नहस कर रहे हैं।

इधर हर्ष महाजन ने भी कांग्रेस छोड़ते हुए कहा कि कांग्रेस दृष्टिहीन, दिशाहीन और नेतृत्वहीन हो गई है। यह ठीक है, चुनावों के आसपास और ठीक पहले पार्टियां और निष्ठाएं बदली जाती हैं, लेकिन जिन लोगों ने पार्टी में अपना जीवन खपाया हो, वे अगर किनारा कर जाएं तो स्पष्ट है कि पार्टी में सब कुछ ठीक-ठाक नहीं है। इन दो दृष्टांतों में कोई मिलीभगत नहीं देखी जानी चाहिए। सभी की निगाहें अब उनके अगले मूव पर थी कि क्या वह भी दूसरों की तरह भाजपा ज्वाइन कर जाएंगे? और यह शंका निर्मूल नहीं थी। ठेठ कांग्रेसी हर्ष महाजन ने मोदी के नेतृत्व और उनकी पार्टी के विजन को स्वीकारते हुए भाजपा में दाखिला ले लिया, हालांकि उन पर कोई भ्रष्टाचार का मामला नहीं चल रह था। ईडी, सीबीआई आदि एजेंसियां भी जीना दुश्वार नहीं किए हुई थीं। भाजपा में जाना, उनका राजनीतिक विवेक था। संभवतः उन्हें लगा हो कि वीरभद्र के जाने के बाद कांग्रेस पार्टी और हाईकमान उनकी बातों को सम्मान नहीं दे रहा है। उनकी बात सुनी नहीं जा रही थी। दूसरे, सुखविंदर सिंह सुक्खू की हाईकमान से नजदीकियां और हर्ष महाजन की वीरभद्र से नजदीकियां और वीरभद्र का रणनीतिकार होना भी आड़े आया होगा। बहरहाल, फरवरी महीने में राज्य की एक राज्यसभा सीट के लिए चुनाव निर्धारित थे। प्रदेश में आई आपदा के बाद वित्तीय संकट से जूझती सुक्खू सरकार को यह इत्मीनान था कि बहुमत का 40 का आंकड़ा उसके पास है ही और वह अपने प्रत्याशी को आसानी से जिता ले जाएगी। विपक्षी भाजपा के पास 25 विधायकों का अल्पमत का आंकड़ा होने से कांग्रेस जीत के प्रति पूर्ण विश्वास में थी। उनको राज्यसभा की सीट बिना किसी व्यवधान के हाथ लगती प्रतीत हुई। कांग्रेस की ओर से देश के विख्यात वकील मनु सिंघवी को राज्य की इस सीट के लिए प्रत्याशी घोषित किया गया, लेकिन एक रणनीति के तहत भाजपा ने हर्ष महाजन को मैदान में उतार कर सबको चौंका दिया।

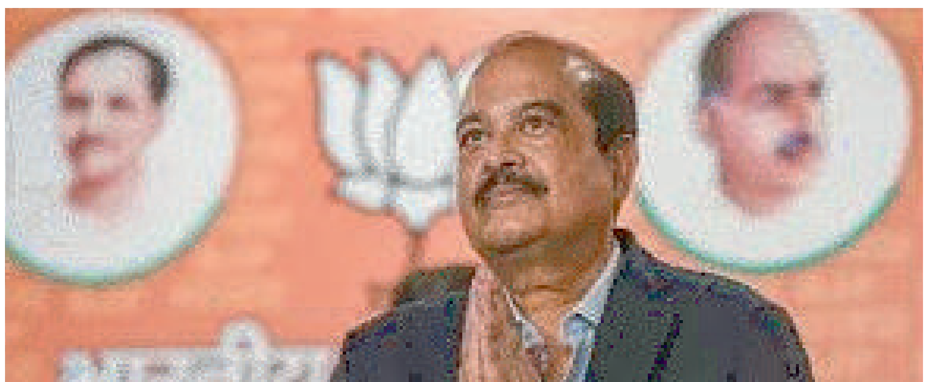

उनकी उम्मीदवारी से सभी को हैरानी तो हुई ही, पर उनकी उम्मीदवारी से यह आशंका जरूर घर कर गई थी कि सियासत में आगे कुछ गर्माहट आने वाली है। हर्ष महाजन अपने सिद्धांतों और पार्टी की बेरुखी के चलते पार्टी छोडऩे का साहस करते हैं। लेकिन भारतीय जनता पार्टी को उनके आने से तत्काल कोई फायदा नहीं मिल पाया था। 2022 के विधानसभा चुनावों में भाजपा मात्र 25 सीटों पर ही सिमट गई थी। राजनीति में नेता के धैर्य की परीक्षा होती है। भले ही विधानसभा चुनावों में वह कुछ खास नहीं कर पाए, पर वह भजपा में नए-नए होने की शुरुआती दिक्कतों से परेशान नहीं हुए। धैर्य के साथ भाजपा में अपनी जगह बनाने में सफल होते हैं। हर्ष महाजन ने बड़ी चतुराई के साथ अपने पुराने संपर्क और परिचय का फायदा उठाया। इन संबंधों को भुनाते हुए कांग्रेस के बागी गुटों को अपने साथ जोड़ लिया। बेहद रोमांचक मुकाबले में क्रॉस वोटिंग हुई और कांग्रेस के छह विधायकों ने अपनी ही सरकार के प्रति नाराजगी जाहिर करते हुए वोट भाजपा के हर्ष महाजन के पक्ष में दे दिया। इस क्रॉस वोटिंग में तीन निर्दलीय विधायकों ने भी बागी कांग्रेसियों का साथ दिया। जब दोनों दलों को बराबर वोट पड़े, तो यहां भी महाजन मुकद्दर का सिकंदर सिद्ध हुए। किस्मत ने भी उनका साथ दिया।

ऐतिहासिक क्रॉस वोटिंग ने कांग्रेस का खेल बिगाड़ कर रख दिया। यह महाजन का राजनीतिक अनुभव, कौशल और रणनीति का प्रतिफलन ही था कि उन्होंने राज्यसभा के सांसद के रूप में शपथ ले ली। हर्ष महाजन के बारे में यह बात मशहूर है कि वह यारों के यार हैं। साथ ले कर चलना, मुस्कुराहट बिखेरते हुए धुर विरोधियों को भी अपना बना लेना, यह उनकी राजनीतिक अदा नहीं है, फितरत है। डट कर साथ निभाना उनके व्यक्तित्व का एक अहम पहलू है, जिसको नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। राजनीति में उन्हें सज्जन नेता माना जाता है। उनको चाहने वाले विरोधी पार्टियों में भी मिलेंगे। वह सहज ही मित्र बना लेते हैं। राजीव गांधी ने ही उन्हें 1986 में हिमाचल युवा कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया था और लगभग एक दशक तक यानी वर्ष 1995 तक वह इस पद पर बने रहे। अपनी वैयक्तिक खूबियों के चलते उन्होंने राजीव गांधी का दिल जीत लिया और फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा। बहरहाल राजनीति में अपने 40 साल से ज्यादा लंबे करियर में हर्ष महाजन आज तक कोई चुनाव नहीं हारे हैं। उनकी योग्यताओं को देखते हुए हर्ष महाजन भाजपा के शीर्ष नेतृत्व का विश्वास जीतने में कामयाब हुए हैं और वर्तमान में भाजपा कोर ग्रुप के सदस्य हैं।

पीए सिद्धार्थ

लगेगी आग तो‘

राहत इन्दौरी साहिब ने जब अपनी गज़ल में यह शे’र कहा होगा, ‘लगेगी आग तो आएंगे घर कई जद में, यहां पे सिर्फ हमारा मकान थोड़ी है’, तब शायद उनको यह एहसास नहीं रहा होगा कि विरोधाभासों से भरे इस देश में कभी लोगों की जान बचाने के लिए कोरोना के इंजेक्शन ही उनकी जान जाने का सबब बन जाएंगे। लेकिन जिस देश में दूध में पानी मिलाने वाली कहावतें न केवल सिर चढ़ कर बोलती हों, बल्कि आम जनमानस में फल-फूल भी रही हों, वहां अगर कोरोना से पार पाने वाले इंजेक्शन पानी साबित हों तो क्या आश्चर्य। इंग्लैंड में एस्ट्रेजेनेका कम्पनी के बने कोविशील्ड पर उठे विवाद के बाद विश्व गुरु देश में बना भारत बॉयोटेक का कोवैक्सीन कैसे पीछे रह सकता था। तू डाल-डाल मैं पात-पात। कुछ लोग कोरोना में टपक गए, जो बचे हैं, वे अब यह सोचकर परेशान हैं कि न जाने कब टपक पड़ें आम की तरह। यूँ भी आमों के मामले में दुनिया में भारत की तूती बोलती है। अपने आप टपकने वाले आमों को टपका कहा जाता है। बेचारा सामान्य आदमी, आदमी न हुआ, आम हो गया। जाने कब टपक पड़े। इसलिए उसे आम आदमी भी कहा जाता है। नाम रखने और बदलने में माहिर भारत सरकार चाहे तो चुनावों के बाद नई सरकार बनते ही आम आदमी को टपका घोषित कर सकती है। अभी हो सकता है कि ऐसा करने पर चुनाव आचार संहिता के बार-बार उल्लंघनों के बावजूद कुंभकरणी नींद में सोया चुनाव आयोग अचकचा कर जाग जाए और सरकार की इस अधिसूचना पर कइयों को चुनाव लडऩे के अयोग्य ठहरा दे। बीमारी से बचाव भला। आम आदमी के लिए सरकार का इतना चिंतित और कल्याणकारी होना ठीक नहीं। अति सर्वत्र वर्जयेत। बस कुछ ही दिनों की बात है। हो सकता है तब तक कोविशील्ड और कोवैक्सीन और प्रभावी हो उठें। वैक्सीन की जद में आए लगाने और लगवाने वाले इतना इन्तज़ार तो कर ही सकते हैं। मुझे यह तो याद नहीं कि मैंने कौनसी वैक्सीन लगवाई है? कोविशील्ड या कोवैक्सीन? या इंजेक्शन को और प्रभावी बनाने के लिए दोनों का घालमेल करवाया था। लेकिन मुझे अपनी जान से ज़्यादा फिक्र बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के उन शोधकर्ताओं और टीम लीडर प्रो. शंख शुभ्र चक्रवर्ती की है, जिन्होंने अपनी रिसर्च में दावा किया है कि कोवैक्सीन लगवाने वाला हर तीसरा आदमी इस वैक्सीन के साइड इफेक्ट्स का मारा है। अशोका यूनिवर्सिटी के जिस प्रोफेसर सब्यसाची दास ने पिछले चुनावों में ईवीएम के नतीजों में सत्ता पक्ष द्वारा की गई हेरफेर की संभावना को लेकर अपना रिसर्च पेपर प्रकाशित किया था, उन्हें अपनी नौकरी छोडऩे के लिए मजबूर होना पड़ा था। मुझे तो इन दोनों रिसर्च में दीदी की साज़िश नजऱ आती है। दोनों बंगाली प्रोफेसर अपनी रिसर्च में सरकार के खिलाफ रिपोर्ट दे रहे हैं। रही अपनी बात तो जिस तरह दुनिया के सबसे बड़े फकीर कहते हैं कि हमारा क्या है जी, जब जी चाहा झोला उठा कर चल देंगे। वैसे ही मैं भी कहता हूँ, ‘हमारा क्या है जी, जब टपके दुनिया छोड़ कर चल देंगे।’ यूँ भी आम आदमी के पास होम लोन, कार लोन और दस तरह की किश्तों के अलावा होता भी क्या है जी।

लेकिन जब से कोविशील्ड और कोवैक्सीन के साइड इफेक्ट्स को लेकर रिपोर्ट सामने आई हैं, कभी छाती या सिर में दर्द हो, तो लगता है कि शरीर में ख़ून के थक्के बनने लगे हैं। अचानक हार्ट अटैक से हो रही मौतों की ख़बरों के बाद मैंने ट्रैड मिल पर भागने की बात तो छोड़ो, तेज़ चलने की क़वायद भी छोड़ दी है। अब मैं किसी गर्भवती गाय की तरह धीरे-धीरे संभल कर चलता हूँ। पर इसका यह मतलब नहीं कि मैं डरता हूँ। भले मेरी छाती 56 इंची न हो, मुझे अंधेरे में डर लगता हो। लेकिन मैं उनकी तरह बहादुर हूँ। जिस तरह वह अक्सर चीन को लाल आँखें दिखाते रहते हैं, उसी तरह मैं भी जब जी चाहे कोरोना के साइड इफेक्ट्स को लाल आँखें दिखाता रहता हूं।

पर्यटन में बढ़ रही भारत की धाक, ग्लोबल ट्रैवल और टूरिज्म इंडेक्स में लगाई लंबी छलांग

परिवहन विशेष न्यूज

भारत के लिए बड़ी खुशखबरी का मौका है। हाल ही में मिली रिपोर्ट में पता चला है कि ग्लोबल ट्रैवल और टूरिज्म इंडेक्स 2024 में भारत 54वें से 39वें स्थान पर पहुंच गया है। जहां अमेरिका इस सूची में सबसे ऊपर है वहीं भारत दक्षिण एशिया और निम्न-मध्यम-आय वाली अर्थव्यवस्थाओं में सर्वोच्च स्थान पर है। आइये इसके बारे में जानते है।

नई दिल्ली। जैसा कि मंगलवार को वार्षिक रिपोर्ट में दिखाया गया है कि विश्व आर्थिक मंच के यात्रा एवं पर्यटन विकास सूचकांक 2024 (ग्लोबल ट्रैवल और टूरिज्म इंडेक्स 2024) में भारत की रैंक बढ़कर 39वें स्थान पर पहुंच गई है, वैश्विक पर्यटन गतिविधियां महामारी से पहले के स्तर पर लौट आई हैं।

WEF ने कहा कि जहां अमेरिका इस सूची में सबसे ऊपर है, वहीं भारत दक्षिण एशिया और निम्न-मध्यम-आय वाली अर्थव्यवस्थाओं में सर्वोच्च स्थान पर है। 2021 में पहले प्रकाशित सूचकांक में भारत 54वें स्थान पर था, हालांकि सूचकांक मापदंडों में किए गए बदलाव पहले के वर्षों की तुलना में इसकी तुलना को सीमित करते हैं।

ये देश भी लिस्ट में शामिल

अमेरिका के बाद, स्पेन, जापान, फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया 2024 की सूची में शीर्ष पांच में शामिल हैं।

सरे विश्वविद्यालय के सहयोग से तैयार किए गए सूचकांक से पता चलता है कि भारत अत्यधिक मूल्य-प्रतिस्पर्धी (18वां) है और प्रतिस्पर्धी वायु परिवहन (26वां) और ग्राउंड और पोर्ट (25वां) बुनियादी ढांचे का दावा करता है।

डब्ल्यूईएफ ने कहा कि विशेष रूप से भारत के मजबूत प्राकृतिक (छठे), सांस्कृतिक (9वें) और गैर-अवकाश (9वें) संसाधन यात्रा को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं, और देश सभी संसाधन स्तंभों के लिए टॉप 10 में स्कोर करने वाले तीन में से केवल एक है।

यात्रा और पर्यटन मांग में स्थिरता

इसके अलावा, 2019 की तुलना में गिरावट के बावजूद, देश अभी भी यात्रा और पर्यटन मांग स्थिरता के मामले में अच्छा स्कोर कर रहा है, विशेष रूप से आने वाले आगंतुकों के बीच अधिक टिकाऊ लंबे प्रवास के लिए धन्यवाद।

इसमें आगे कहा गया है कि कई अर्थव्यवस्थाओं की तरह, भारत में यात्रा और पर्यटन सक्षम स्थितियां इस क्षेत्र के लिए वैश्विक मुद्रास्फीति आपूर्ति-पक्ष के रुझान से प्रभावित हुई हैं, जिससे मूल्य प्रतिस्पर्धात्मकता में गिरावट आई है, जबकि हवाई परिवहन और पर्यटन सेवाओं का बुनियादी ढांचा अभी भी 2019 के स्तर तक नहीं पहुंच पाया है।

परिणामस्वरूप, देश का समग्र TTDI (यात्रा और पर्यटन विकास सूचकांक) स्कोर 2019 के स्तर से 2.1 प्रतिशत कम है। यूरोप और एशिया-प्रशांत में उच्च आय वाली अर्थव्यवस्थाएं सूचकांक में अग्रणी बनी रहीं।

GDP ग्रोथ में योगदान

WEF ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में यात्रा और पर्यटन क्षेत्र का योगदान इस साल महामारी-पूर्व के स्तर पर लौटने की उम्मीद है, जो कि COVID-19 से संबंधित यात्रा प्रतिबंधों को हटाने और मजबूत मांग में वृद्धि के कारण है।

मध्य पूर्व में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन में रिकवरी दर सबसे अधिक (2019 के स्तर से 20 प्रतिशत ऊपर) थी, जबकि यूरोप, अफ्रीका और अमेरिका सभी ने 2023 में लगभग 90 प्रतिशत की मजबूत रिकवरी दिखाई।

द्विवार्षिक सूचकांक ने विभिन्न कारकों और नीतियों के आधार पर 119 देशों के यात्रा और पर्यटन क्षेत्रों का विश्लेषण किया। जर्मनी छठे स्थान पर था, उसके बाद शीर्ष दस में यूके, चीन, इटली और स्विट्जरलैंड थे।

परिणामों ने इस बात पर प्रकाश डाला कि उच्च आय वाली अर्थव्यवस्थाओं में आम तौर पर यात्रा और पर्यटन विकास के लिए अधिक अनुकूल परिस्थितियाँ बनी रहती हैं।

इसे अनुकूल कारोबारी माहौल, गतिशील श्रम बाजार, खुली यात्रा नीतियों, मजबूत परिवहन और पर्यटन बुनियादी ढांचे और अच्छी तरह से विकसित प्राकृतिक, सांस्कृतिक और गैर-अवकाश आकर्षणों से मदद मिली।

मार्च तिमाही में 78 फीसदी बढ़ा ONGC का मुनाफा, शेयरहोल्डर्स को मिलेगा तगड़ा डिविडेंड; जानें शेयरों का हाल

परिवहन विशेष न्यूज

तेल निकालने वाली सरकारी कंपनी ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन (ONGC) को मार्च तिमाही में तगड़ा मुनाफा हुआ है। इसका कंसालिडेटेड नेट प्रॉफिट सालाना आधार पर 78 फीसदी बढ़ गया। इस सरकारी कंपनी को मार्च 2024 तिमाही में 11526 .53 करोड़ रुपये का शुद्ध कंसालिडेटेड प्रॉफिट हुआ। यह एक साल पहले 6478 .23 करोड़ रुपये था। कंपनी ने शेयरहोल्डर्स के लिए तगड़े डिविडेंड का एलान किया है।

नई दिल्ली। तेल निकालने वाली सरकारी कंपनी ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन (ONGC) को मार्च तिमाही में तगड़ा मुनाफा हुआ है। इसका कंसालिडेटेड नेट प्रॉफिट सालाना आधार पर 78 फीसदी बढ़ गया। इस सरकारी कंपनी को मार्च 2024 तिमाही में 11,526.53 करोड़ रुपये का शुद्ध कंसालिडेटेड प्रॉफिट हुआ। यह एक साल पहले 6,478.23 करोड़ रुपये था।

डिविडेंड का भी एलान

अगर तिमाही आधार पर देखें तो कंपनी के मुनाफे में मामूली इजाफा हुआ है। ONGC ने दिसंबर 2023 तिमाही में ही 11,104.50 करोड़ रुपये का मुनाफा कमा लिया था। कंपनी ने डिविडेंड का भी एलान किया है। यह शेयरहोल्डर्स को 5 रुपये की फेस वैल्यू वाले हर शेयर पर वित्त वर्ष 2024 के लिए 2.50 रुपये का फाइनल डिविडेंड देगी।

क्रूड का भाव बढ़ा

ONGC ने मार्च तिमाही में 80.81 डॉलर प्रति बैरल के भाव क्रूड ऑयल बेचा। एक साल पहले यह 77.12 डॉलर प्रति बैरल के हिसाब से कच्चा तेल बेच रही थी। कंपनी का क्रूड ऑयल प्रोडक्शन भी सालाना आधार पर 2.4 फीसदी बढ़कर 5.359 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) पर पहुंच गया। हालांकि पूरे वित्त वर्ष 2024 के लिहाज से देखें, तो इसमें 1.6 फीसदी की गिरावट आई है।

34 साल का टूटा रिकॉर्ड

ONGC वित्त वर्ष 2024 में ने 541 तेल कुएं खोदे। पिछले 34 में यह सबसे अधिक है। इनमें 103 एक्सप्लोरेटरी और 438 डेवलपमेंट वाले थे। पिछले वित्त वर्ष में कंपनी ने करीब 37 हजार करोड़ रुपये का कैपिटल एक्सपेंडिचर किया। वहीं, इससे पहले के वित्त वर्ष 2023 में यह आंकड़ा 30,208 करोड़ रुपये था।

रिकॉर्ड स्तर छूने के बाद कम हुए सोने और चांदी के दाम, अब इतने का मिल रहा 10 ग्राम गोल्ड

परिवहन विशेष न्यूज

एचडीएफसी सिक्योरिटीज के अनुसार मंगलवार को सोने और चांदी की कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचने के बाद घट गई है। जहां सोने की कीमत सोने की कीमतें 550 रुपये गिरकर 74650 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गईं। वहीं चांदी की कीमत भी 1600 रुपये घटकर 94500 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई। पिछले सत्र में यह 75200 रुपये प्रति 10 ग्राम और चांदी 96100 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुआ था।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में मंगलवार को सोने और चांदी की कीमतें रिकॉर्ड ऊंचाई के बाद नीचे आ गई है। मुनाफावसूली और कमजोर वैश्विक रुझानों के कारण सोना 550 रुपये प्रति 10 ग्राम तक गिर गई।

एचडीएफसी सिक्योरिटीज के अनुसार, सोने की कीमतें अमेरिकी फेड रिजर्व सदस्यों में से एक की तीखी टिप्पणियों से प्रभावित हुईं, जिन्होंने सुझाव दिया कि मुद्रास्फीति को लक्ष्य पर वापस लाने के लिए ब्याज दरों को लंबी अवधि तक मौजूदा स्तर पर जारी रखने की आवश्यकता होगी।

घट गई सोने की कीमत

सोने की कीमतें 550 रुपये गिरकर 74,650 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गईं। पिछले सत्र में यह 75,200 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। वहीं चांदी की कीमत भी 1,600 रुपये घटकर 94,500 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई। यह पिछले सत्र में यह 96,100 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुआ था।

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में क्या है कीमत

एचडीएफसी सिक्योरिटीज में कमोडिटी के वरिष्ठ विश्लेषक सौमिल गांधी ने कहा कि दिल्ली के बाजारों में सोने की हाजिर कीमतें (24 कैरेट) 74,650 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रही थीं, जो पिछले बंद के मुकाबले 550 रुपये कम है।

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में, कॉमेक्स पर सोना हाजिर 2,420 अमेरिकी डॉलर पर कारोबार कर रहा था प्रति औंस, पिछले बंद से 22 अमेरिकी डॉलर कम। चांदी गिरावट के साथ 31.60 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर बोली जा रही थी।

शुरुआती कारोबार में सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंचने के बाद, मुनाफावसूली के कारण सोना थोड़ा नीचे कारोबार कर रहा है।

ब्लिंकएक्स और जेएम फाइनेंशियल सर्विसेज के रिसर्च (कमोडिटी एंड करेंसी) के वीपी, प्रणव मेर ने कहा कि आने वाले आंकड़ों में आर्थिक गतिविधियों में मंदी के साथ-साथ मुद्रास्फीति में गिरावट के संकेत मिलने के बाद फेडरल रिजर्व द्वारा दरों में शुरुआती कटौती के बढ़ते दांव के बीच अंतर्निहित गति सकारात्मक बनी हुई है।

विशेषज्ञों के अनुसार, व्यापारी विभिन्न फेड अधिकारियों की टिप्पणियों के साथ-साथ बुधवार को जारी होने वाली फेडरल ओपन मार्केट कमेटी (एफओएमसी) की बैठक के मिनटों पर बारीकी से नजर रखेंगे, जो फेड की मौद्रिक नीति दृष्टिकोण पर अधिक जानकारी प्रदान करेगा।

इनसाइड

वित्त मंत्रालय पूर्ण बजट में बढ़ा सकता सीपीएसई लाभांश अनुमान

सरकार ने अंतरिम बजट 2024-25 में चालू वित्त वर्ष के लिए गैर-वित्तीय केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों (सीपीएसई) से लाभांश का अनुमान 48000 करोड़ रुपये लगाया है। अधिकारी ने बताया कि अंतरिम बजट अनुमान दिसंबर 2023 और जनवरी 2024 के अनुमानों पर आधारित थे।

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय जुलाई में पेश होने वाले पूर्ण बजट में चालू वित्त वर्ष 2024-25 के लिए सीपीएसई लाभांश अनुमान को 5,000 करोड़ रुपये बढ़ाकर करीब 53,000 करोड़ रुपये कर सकता है।

क्या है अनुमान?

सरकार ने अंतरिम बजट 2024-25 में चालू वित्त वर्ष के लिए गैर-वित्तीय केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों (सीपीएसई) से लाभांश का अनुमान 48,000 करोड़ रुपये लगाया है। एक अधिकारी ने कहा, 'जुलाई में पेश होने वाले पूर्ण बजट में अनुमान करीब 5,000 करोड़ रुपये तक बढ़ाया जा सकता है।'

सरकार ने जुटाई इतनी रकम

अधिकारी ने बताया कि अंतरिम बजट अनुमान दिसंबर 2023 और जनवरी 2024 के अनुमानों पर आधारित थे। पूर्ण बजट में अनुमान अधिक होंगे, क्योंकि अब लाभांश की तस्वीर अधिक स्पष्ट है।

सरकार को चालू वित्त वर्ष में सीपीएसई से लाभांश के रूप में 4,837.25 करोड़ रुपये मिले हैं। वित्त वर्ष 2023-24 में लाभांश प्राप्तियां 63,000 करोड़ रुपये रहीं, जो वित्त वर्ष 2022-23 में 59,953 करोड़ रुपये थीं।

भारत में बढ़ रही है मांग, ग्रामीण इलाकों में भी ज्यादा खर्च कर रहें लोग- आरबीआई

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में कुल मांग की गति बढ़ रही है ग्रामीण खर्च में सुधार के कारण कुल गैर-खाद्य खर्च बढ़ रहा है। व्यक्तिगत उपभोग के क्षेत्र में नीलसन आईक्यू डेटा लेख से संकेत मिलता है कि एक स्वागत योग्य मोड़ चल रहा है जो इस श्रेणी के खर्च को बढ़ावा देगा। बीती तिमाही में एफएमसीजी वॉल्यूम में 6 .5% की वृद्धि हुई।

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक ने मंगलवार को अपने मासिक बुलेटिन में कहा कि भारत में कुल मांग की गति बढ़ रही है, ग्रामीण खर्च में सुधार के कारण कुल गैर-खाद्य खर्च बढ़ रहा है। आरबीआई ने 'अर्थव्यवस्था की स्थिति' में कहा कि हाल के संकेतक समग्र मांग की गति में तेजी की ओर इशारा कर रहे हैं।

व्यक्तिगत उपभोग के क्षेत्र में, नीलसन आईक्यू डेटा लेख से संकेत मिलता है कि एक स्वागत योग्य मोड़ चल रहा है जो इस श्रेणी के खर्च को बढ़ावा देगा। बुलेटिन में कहा गया है कि तेजी से बढ़ने वाली उपभोक्ता वस्तुओं (एफएमसीजी) की ग्रामीण मांग कम से कम दो साल में पहली बार शहरी बाजारों से आगे निकल गई है।

ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ा खर्चा

अभी बीती तिमाही में एफएमसीजी वॉल्यूम में 6.5% की वृद्धि हुई, जो घरेलू और व्यक्तिगत देखभाल उत्पादों की मजबूत मांग के कारण 5.7% की शहरी वृद्धि के सापेक्ष 7.6% की ग्रामीण वृद्धि से प्रेरित थी।

आरबीआई ने अलग से यह भी कहा कि अप्रैल में हेडलाइन मुद्रास्फीति में मामूली कमी ने इस उम्मीद की पुष्टि की है कि 4% के लक्ष्य के साथ संरेखण की असमान और पिछड़ी गति चल रही है। अप्रैल में वार्षिक खुदरा मुद्रास्फीति 4.83% थी, जो मार्च में 4.85% से कम थी।

आरबीआई ने कहा कि खाद्य श्रेणी में सब्जियों, अनाज, दालों, मांस और मछली की कीमतें ईंधन की कीमतों में अपस्फीति और मुख्य मुद्रास्फीति के एक नए ऐतिहासिक निचले स्तर तक नरम होने के बावजूद, निकट अवधि में हेडलाइन मुद्रास्फीति को ऊंचा और 5% के करीब रख सकती हैं।

इसमें कहा गया है कि हालांकि सांख्यिकीय आधार प्रभाव जुलाई और अगस्त में हेडलाइन मुद्रास्फीति को कम करने में मदद कर सकता है, लेकिन उम्मीद है कि सितंबर में उलटफेर देखने को मिल सकता है।

कैसे चलन में आया क्रेडिट कार्ड, क्या है इसके पीछे की कहानी?

परिवहन विशेष न्यूज

आज क्रेडिट कार्ड का चलन काफी बढ़ गया है। बहुत से लोगों के पास एक से ज्यादा क्रेडिट कार्ड हैं। यह असल में लाखों लोगों की जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है। इनमें खासकर नौकरीपेशा नौजवान हैं जो शॉपिंग से लेकर जरूरी बिल का भुगतान करने के लिए क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करते हैं। आइए जानते हैं कि क्रेडिट कार्ड की शुरुआत कब हुई और इसकी लोकप्रियता कैसे बढ़ी?

नई दिल्ली। आज अगर आप कहते हैं कि क्रेडिट कार्ड काफी लोकप्रिय हो गया है, तो शायद आप इसकी अहमियत को कम करके आंक रहे हैं। यह असल में लाखों लोगों की जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है। इनमें खासकर नौकरीपेशा नौजवान हैं, जो शॉपिंग से लेकर जरूरी बिल का भुगतान करने के लिए क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करते हैं।

हममें से अधिकतर क्रेडिट कार्ड का रोजाना इस्तेमाल करते हैं, लेकिन क्या आपको पता है कि क्रेडिट कार्ड चलन में कब आया, इसकी शुरुआत कैसे हुई, भारत में इसका आगमन कब हुआ और भारत में कितने लोगों के पास क्रेडिट कार्ड है? आइए इन सभी सवालों का जवाब जानते हैं।

कब आया क्रेडिट कार्ड का कॉन्सेप्ट?

क्रेडिट कार्ड का मतलब होता है- पहले खर्च करना, बाद में भुगतान करना। वैसे यह परंपरा सदियों पुरानी है। जब से इंसानों में सामाजिकता का विकास हुआ, तभी से वह इस तरह का लेनदेन कर रहे हैं। लेकिन, क्रेडिट कार्ड की औपचारिक शुरुआत साल 20वीं सदी के मध्य तक मानी जाती है।

दुनिया का पहला क्रेडिट कार्ड डाइनर्स क्लब ने पेश किया था। (फोटो सोर्स- Quara)

लेकिन, इसकी नींव 1900 के शुरुआती सालों में पड़ गई थी। अमेरिका जैसे देशों में डिपार्टमेंटल स्टोर और तेल कंपनियां ने अपना क्रेडिट कार्ड लॉन्च किया। लेकिन, ये आज के ट्रेडिशनल क्रेडिट कार्ड जैसे नहीं थे। इनका इस्तेमाल आप कुछ खास ही स्टोर पर कर सकते थे।

खास बात यह थी कि इनकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी। बहुत से अमीर लोग ऐसे थे, जो पैसे लेकर चलने से परहेज करते थे। वे स्टोर और रेस्टोरेंट में इन कार्ड का इस्तेमाल करने लगे।

आधुनिक क्रेडिट कार्ड कैसे चलन में आया?

साल 1950 की बात है। अमेरिका के प्रतिष्ठित डायनर्स क्लब इंटरनेशनल के फाउंडर फ्रैंक मैकनामारा (Frank McNamara) खाना खाने न्यूयॉर्क के एक रेस्टोरेंट में पहुंचे। छककर खाने के बाद जेब में हाथ डाला, तो पता चला कि अपना बटुआ तो घर पर ही भूल आए हैं।

यहीं उनके दिमाग में आइडिया आया कि एक ऐसा कार्ड भी होना चाहिए, जिसका इस्तेमाल सिर्फ डिपार्टमेंटल स्टोर ही नहीं, बल्कि बाकी जगहों पर भी खरीदारी और बिल चुकाने के लिए किया जा सके।

इसी मंसूबे के साथ दुनिया का पहला आधिकारिक क्रेडिट कार्ड- डायनर्स क्लब कार्ड चलन में आया। इसे 1951 में लॉन्च किया गया। पहले तो यह मुख्य रूप से यात्रा और मनोरंजन से जुड़े खर्चों पर फोकस करता था। लेकिन, यह इतना सफल हुआ कि इसने क्रेडिट कार्ड क्रांति के लिए रास्ता खोल दिया।

भारत में कब चला क्रेडिट कार्ड?

पश्चिमी देशों में झंडे गाड़ने के बाद क्रेडिट कार्ड 1980 के दशक में भारत आया। हालांकि, भारत में भी पहले खर्च करने और बाद में उसे चुकाने की व्यवस्था अनौपचारिक रूप से सदियों से प्रचलित थी। लेकिन, इसमें क्रेडिट कार्ड के साथ और भी तेज उछाल आया।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) ने 1988 में अपना क्रेडिट कार्ड पेश किया। इससे देश के फाइनेंशियल इतिहास में एक नए युग की शुरुआत हुई। यहां से दूसरे बैंकों और फाइनेंशियल इंस्टीट्यूशंस ने भी क्रेडिट कार्ड मॉडल को अपनाया। इसने देश के पेमेंट और शॉपिंग के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव किया।

भारत में कितने लोगों के पास क्रेडिट कार्ड?

रिजर्व बैंक (RBI) के डेटा के मुताबिक, भारत में साल 2023 के आखिर तक 9 करोड़ से अधिक एक्टिव क्रेडिट कार्ड थे। 2022 में यह संख्या 8 करोड़ से कम थी यानी इस साल के दौरान क्रेडिट कार्डधारकों की तादाद में 17 फीसदी का उछाल आया। वहीं जनवरी 2020 की बात करें, तो सिर्फ 5.6 करोड़ लोगों के पास क्रेडिट कार्ड थे। इसका मतलब कि करीब करीब तीन साल में क्रेडिट कार्ड की संख्या में 63 फीसदी का उछाल आया है।

अमेरिका जैसे विकसित मुल्क की बात करें, तो वहां करीब 82 फीसदी लोगों के पास कम से कम एक क्रेडिट कार्ड है। बहुत से लोग ऐसे हैं, जिनके पास कई कार्ड हैं। इसका अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि अमेरिकियों के पास औसतन 3.84 क्रेडिट कार्ड हैं।

कैसे बदला क्रेडिट कार्ड का इतिहास

- 1970 में मैग्नेटिक स्ट्रिप टेक्नोलॉजी आई। इससे क्रेडिट कार्ड की सिक्योरिटी बढ़ी और इलेक्ट्रिक अथॉराइजेशन का रास्ता साफ हुआ।
- 1990 के दशक में क्रेडिट कार्ड में माइक्रोचिप इस्तेमाल होने लगी। इससे जालसाजों के लिए क्लोन बनाना या डेटा से हेरफेर करना ज्यादा मुश्किल हो गया।
- 2000 के दशक में इंटरनेट और ईकॉमर्स प्लेटफॉर्म का आगमन हुआ। इसने क्रेडिट कार्ड इस्तेमाल करने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव किया।
- 2010 के दशक में कॉन्टैक्टलेस टेक्नोलॉजी आई। इससे कार्डहोल्डर्स को सिर्फ अपने कार्ड पर टैप करके तेज और सुरक्षित पेमेंट करने की सहूलियत मिली।
- पिछले कुछ साल में डिजिटल वॉलेट और मोबाइल पेमेंट के साथ क्रेडिट कार्ड के तालमेल ने तहलका ही मचा दिया। इससे क्रेडिट कार्ड यूज में और उछाल आया है।
- क्रेडिट कार्ड को UPI से जोड़ने पर इसका इस्तेमाल और बढ़ने का अनुमान है। फिलहाल, यह सुविधा सिर्फ रुपे क्रेडिट कार्ड तक ही सीमित है।

सनातन, संत और भगवा से कौन चिढ़ता है? आचार्य प्रमोद कृष्णम के निशाने पर क्यों आया इंडिया

परिवहन विशेष न्यूज

कांग्रेस के पूर्व नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम इंडिया ने कांग्रेस के साथ ही इंडिया गठबंधन को निशाने पर रखा। प्रमोद कृष्णम ने कहा कि विपक्ष भगवा शब्द को मिटाना चाहता है। उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्ष भारत में वामपंथियों का राज चाहता है। उन्होंने इंडिया गठबंधन पर हिंदू आस्था का मजाक उड़ाने का आरोप भी लगाया।

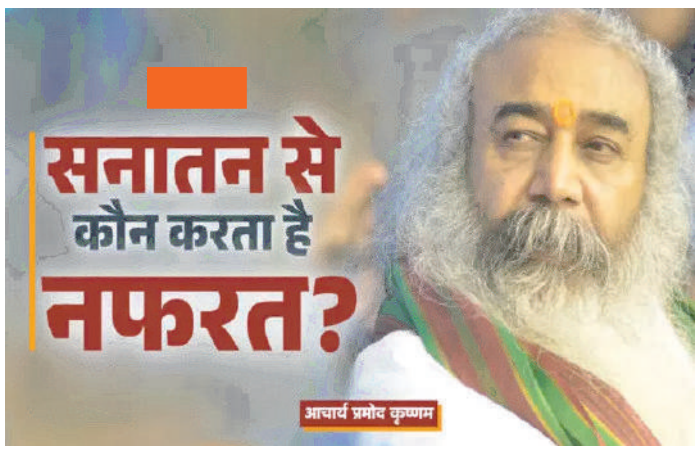

नई दिल्ली : महाराष्ट्र कांग्रेस के अध्यक्ष नाना पटोले की ओर से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लेकर दिए गए विवादित बयान के बाद सियासत गरमा गई है। कांग्रेस के पूर्व नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने इस बयान पर तीखी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए कहा कि विपक्ष चाहता है कि इस देश में वामपंथियों का राज हो और देश में अराजकता फैले। ये लोग भगवा शब्द को मिटाना चाहते हैं। ये लोग चाहते हैं कि सनातन को मिटा दिया जाए। इंडिया गठबंधन के नेता हर रोज सनातन के खिलाफ बोलते हैं। हिंदू को गाली देते हैं और हिंदू आस्था का मजाक उड़ाते हैं। अब इनसे पूछो कि भगवा रंग तो भारत के झंडे में है, उसमें से कैसे निकालेंगे? भगवा हमारे पराक्रम और संविधान का प्रतीक है। भगवा से इतनी चिढ़ क्यों है?

'भारत का साधु देश के गौरव की बात करता है'

उन्होंने आगे कहा कि स्टेट के नेता छोड़िए, कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बोलते हैं यदि तीसरी बार मोदी प्रधानमंत्री बन गए तो सनातन की सत्ता आ जाएगी। सनातन के बिना मानवता की कल्पना नहीं की जा सकती। सनातन और भारत अलग नहीं है। सनातन ही भारत है। सनातन के जितने भी सूत्र हैं, पूरी दुनिया उसको फॉलो कर रही है। इनको लगता है कि जितने भी साधु हैं वह बीजेपी के हैं, जो बिल्कुल गलत है। भारत का साधु और संन्यासी भारत के गौरव की बात करता है। वह सनातन की बात करता है। वह सच्चाई की बात करता है। लेकिन विपक्ष को इससे भी दिक्कत है। इनको हिंदू संत समाज से दिक्कत है। इनको राम से दिक्कत है। अयोध्या से दिक्कत है। हिंदू शब्द से इनको चिढ़ है। 4 जून के बाद दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।

बंगाल में बीजेपी करेगी क्लीन स्वीप?

बंगाल में भाजपा के चुनावी अभियान को लेकर आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा कि बंगाल का पूरा हिंदू जनमानस एकत्र हो चुका है। 4 जून के चुनावी नतीजों के दिन भाजपा राज्य की सभी सीटों पर स्वीप करेगी। स्वाति मालीवाल के मुद्दे पर आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा, ₹इस सवाल का जवाब अरविंद केजरीवाल ही दे सकते हैं। केजरीवाल को इस पर फैसला लेना है, क्योंकि पीड़िता और हमलावर दोनों ही उनकी ही पार्टी के हैं। घटना सीएम आवास में घटी है। दोनों को बुलाकर अलग-अलग बात करें। मुझे लगता है कि सारा दामोदर सीएम केजरीवाल के ऊपर है। जहां तक कानून का सवाल है, कानून अपना काम कर रहा है। स्वाति मालीवाल को न्याय जरूर मिलेगा।

मोदी को सत्ता से हटाना एकमात्र मकसद

पांचवें चरण के चुनाव को लेकर आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा कि इंडिया गठबंधन का एक ही मकसद है, मोदी को सत्ता से हटाना और जब सरकार बन जाए तो देश को लूटना। पूरे देश में पीएम नरेंद्र मोदी के सामने प्रधानमंत्री उम्मीदवार का कोई चेहरा इंडिया गठबंधन ने सामने नहीं लाया है। इन्होंने चुनावी बारात में कोई दूल्हा भी तय नहीं किया है, ना ही इनके पास नीति है और ना ही नेता है। उन्होंने आगे कहा कि पंजाब में आम आदमी पार्टी कांग्रेस को गाली देती है और कांग्रेस आम आदमी पार्टी को गाली देती है। इसी तरह समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस को कितना गाली दी और कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी को चोर बताया। क्या ऐसे नेताओं को देश की कमान सौंपी जा सकती है, जिनके ऊपर तमाम आरोप हैं। उनके ऊपर तमाम मुकदमे चल रहे हैं। अभी तक के चुनावी रुझान को देखते हुए तस्वीर साफ है कि एक बार फिर से मोदी सरकार आने वाली है। चुनावी नतीजों के बाद नरेंद्र मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बनने वाले हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने आर्टिकल 370 से जुड़े अपने आदेश की समीक्षा के लिए दायर याचिकाएं खारिज कीं

परिवहन विशेष न्यूज

सुप्रीम कोर्ट अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर को मिले विशेष राज्य के दर्जे को रद्द करने के केंद्र सरकार के फैसले को सही ठहराने के अपने आदेश की समीक्षा नहीं करेगा। कोर्ट ने आदेश की समीक्षा के लिए दायर याचिकाओं को खारिज कर दिया है।

नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले संविधान के अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के केंद्र सरकार के फैसले को सर्वसम्मति से बरकरार रखने के 11 दिसंबर 2023 के अपने आदेश की समीक्षा के लिए दायर याचिकाएं खारिज कर दी हैं। भारत के प्रधान न्यायाधीश (CJI) डी. वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच जजों की बेंच ने समीक्षा याचिकाओं पर विचार किया और उन्हें खुली अदालत में सूचीबद्ध करने के अनुरोध को खारिज कर दिया।

बेंच में जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस बी. आर. गवई, जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस ए. एस. बोपन्ना भी थे।

बेंच ने एक मई के अपने आदेश में कहा कि समीक्षा याचिकाओं पर गौर करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि उच्चतम न्यायालय नियमावली 2013 के नियम 1 आदेश 47 के तहत समीक्षा के लिए कोई आधार नहीं है, इसलिए समीक्षा याचिकाएं खारिज की जाती हैं।

पिछले साल 11 दिसंबर को शीर्ष अदालत ने केंद्र के 2019 के फैसले को बरकरार रखा था। साथ ही अदालत ने इस साल सितंबर के अंत तक जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव कराने और इसका राज्य का दर्जा 'जल्द से जल्द' बहाल करने का आदेश दिया था।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा था कि आर्टिकल 370 अस्थायी और संक्रमणकारी प्रकृति का था। इस अस्थायी प्रावधान को 1947 में राज्य (जम्मू और कश्मीर) के युद्ध जैसे हालात से निपटने के लिए रखा गया था।

निचले दर्जे का निजी हमला... ममता पर अभद्र टिप्पणी करने वाले पूर्व जज पर EC सख्त, क्या ऐक्शन लिया?

कलकत्ता उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश और बीजेपी के उम्मीदवार अभिजीत गंगोपाध्याय ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ 'अमर्यादित' टिप्पणी को लेकर निर्वाचन आयोग की ओर से जारी कारण बताओ नोटिस पर सोमवार को अपना जवाब भेजा। यह मामला लगातार तूल पकड़ता जा रहा है।

नई दिल्ली: चुनाव आयोग ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ की गई विवादित टिप्पणी को लेकर मंगलवार को सख्त फैसला लिया है। आयोग ने कलकत्ता उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश और बीजेपी उम्मीदवार अभिजीत गंगोपाध्याय के चुनाव प्रचार करने पर 24 घंटे के लिए रोक लगा दी। आयोग ने अपने आदेश में बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी.नड्डा से पार्टी की ओर से सभी उम्मीदवारों और प्रचारकों को परामर्श जारी करने को कहा ताकि सुनिश्चित हो सके कि इस तरह की गलती दोबारा न हो। निवार्चन आयोग ने गंगोपाध्याय की टिप्पणी को 'निचले दर्जे का निजी हमला' करार दिया और कहा कि यह आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन है।निर्वाचन आयोग ने तमलुक से भाजपा उम्मीदवार गंगोपाध्याय को चेतावनी दी कि वह चुनाव प्रचार के दौरान सार्वजनिक रूप से बयान देने के दौरान सतर्क रहें।

बनर्जी पर गंगोपाध्याय द्वारा की गई टिप्पणी का संदर्भ देते हुए निर्वाचन आयोग ने कहा, 'यह कहते हुए दुख हो रहा है कि इस तरह के भद्दे शब्द गंगोपाध्याय द्वारा इस्तेमाल किए गए जो शिक्षित हैं और जिनकी पेशेवर पृष्ठभूमि है। इसलिए वह संदेह के किसी भी लाभ के अधिकारी नहीं हैं।' निर्वाचन आयोग ने गंगोपाध्याय को बनर्जी के खिलाफ कथित 'असम्मानजनक' टिप्पणी को लेकर कारण बताओ नोटिस जारी किया था जिसका जवाब उन्होंने सोमवार को दाखिल किया था। आयोग ने आदेश में कहा, 'आयोग ने अभिजीत गंगोपाध्याय के उपरोक्त उत्तर में दी गई सामग्री और कथनों को ध्यान से पढ़ा है और दिए गए बयान को फिर से देखा है। आयोग आश्वस्त है कि उन्होंने निम्न स्तर का व्यक्तिगत हमला किया है और इस प्रकार आदर्श आचार संहिता के प्रावधानों का उल्लंघन किया है।' इसमें कहा गया, 'इसलिए, आयोग उपरोक्त कदाचार के लिए गंगोपाध्याय की कड़ी निंदा करता है और उनके 21 मई की शाम पांच बजे से 24 घंटे के लिए चुनाव प्रचार करने पर रोक लगाता है।'

चुनाव आयोग ने क्या टिप्पणी की?

निर्वाचन आयोग ने कहा कि नियमों के अनुसार नेता द्वारा अन्य पार्टियों की आलोचना उसकी नीतियों और कार्यक्रम, पिछले रिकॉर्ड और काम तक ही सीमित होनी चाहिए और 'निजी जीवन के सभी पहलुओं की आलोचना से बचना चाहिए, जो कि अन्य दलों के नेता या कार्यकर्ता की सार्वजनिक गतिविधियों से जुड़े नहीं हैं।' आदेश में कहा गया अप्रमाणिक आरोपों या विरूपण के आधार पर अन्य पार्टियों या उनके कार्यकर्ताओं की आलोचना से भी बचना चाहिए।

तृणमूल कांग्रेस की शिकायत पर EC ने की कार्रवाई

निर्वाचन आयोग ने यह कार्रवाई तृणमूल कांग्रेस की शिकायत पर की है। तृणमूल कांग्रेस ने 15 मई को गंगोपाध्याय द्वारा हल्दिया में एक जनसभा को संबोधित करते समय दिए गए बयान पर आपत्ति जताई थी। आयोग ने अपने आदेश में नड्डा से कहा, 'आयोग आपको सलाह देता है कि आप पार्टी की ओर से सभी उम्मीदवारों और प्रचारकों को परामर्श जारी करें ताकि सुनिश्चित हो सके कि चुनाव प्रचार अभियान के दौरान इस तरह की गलती दोबारा न हो।' निर्वाचन आयोग के निर्देश पर भाजपा प्रवक्ता समित भट्टाचार्य ने कहा कि पार्टी फैसले को स्वीकार करती है लेकिन सवाल है कि आयोग तब कोई कदम क्यों नहीं उठाता जब विपक्षी नेता प्रधानमंत्री और भाजपा के अन्य नेताओं पर मौखिक हमला करते हैं।

मामला पकड़ रहा है तूल

भट्टाचार्य ने कहा, 'मैं निर्वाचन आयोग से कहूंगा कि वे अपनी आंखें और कान खुले रखें... जिस तरह से आयोग ने उन मामलों में चुप्पी साध रखी है, मुझे लगता है कि उसे ईएनटी (आंख नाक और गला) विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए... एम्स, नयी दिल्ली उससे (आयोग के कार्यालय से) ज्यादा दूर नहीं है।' भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि तृणमूल कांग्रेस ने पूरे प्रकरण को गलत तरीके से आयोग के समक्ष रखा।

हवाई यात्रा के दौरान विमान का 'दुश्मन' टर्बुलेंस आखिर होता क्या है, समझ लीजिए एक-एक बात

लंदन से सिंगापुर जा रहे सिंगापुर एयरलाइंस के बोइंग 777 विमान को रास्ते में 'गंभीर टर्बुलेंस' का सामना करना पड़ा। इस घटना में एक हवाई यात्री की मौत हो गई और कई घायल हो गए। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर यह टर्बुलेंस होता क्या है। विमानों के लिए यह कितना खतरनाक हो सकता है।

नई दिल्ली : लंदन से सिंगापुर जा रही सिंगापुर एयरलाइंस की फ्लाइट को उड़ान के दौरान गंभीर टंर्बुलेंस का सामना करना पड़ा। इस दौरान एक हवाई यात्री की मौत हो गई। वहीं, करीब 30 से अधिक पैसेंजर घायल हो गए। विमान को आनन-फानन में बैंकॉक की ओर मोड़ दिया गया। यहां विमान की इमरजेंसी लैंडिंग हुई। सिंगापुर एयरलाइन ने एक बयान में कहा कि 20 मई, 2024 को लंदन (हीथ्रो) से सिंगापुर के लिए उड़ान भरने वाली उड़ान एसक्यू 321 को रास्ते में गंभीर टर्बुलेंस का सामना करना पड़ा। अब सवाल है कि आखिर ये टर्बुलेंस होता क्या है जिसकी वजह से यात्री को जान गंवानी पड़ी।

क्या होता है टर्बुलेंस?

एविएशन सेक्टर में टर्बुलेंस काफी चर्चित शब्द है। टर्बुलेंस से आशय हवा के फ्लो में बदलाव की वजह से होने वाली अस्थिरता से है। यह एक ऐसी घटना होती है जिससे हर विमान बचना चाहता है। टर्बुलेंस एयर फ्लो और प्रेशर में अचानक से आया बदलाव होता है। इसे हवा के उस फ्लो में बाधा के रूप में समझ सकते हैं जो विमान के उड़ने में मददगार होता है। इससे विमान को धक्का लगता है। ऐसे में विमान अनियमित वर्टिकल मोशन में चलता जाता है। इसके चलते विमान तेजी से ऊपर-नीचे होने लगता है। इस तरह विमान अपने रेगुलर रूट से हट जाता है। टर्बुलेंस की वजह से मामूली झटके से लेकर लंबे समय तक झटके लगते हैं। इसके गंभीर हादसे की आशंका भी पैदा हो जाती है। अन्य शब्दों में टर्बुलेंस हवा की अनियमित गति है जो विमान की ऊंचाई या कोण में अनियमित परिवर्तन का कारण बनती है। इससे विमान में सवार लोगों के लिए ऊबड़-खाबड़पन, उथल-पुथल या उछाल जैसा महसूस होता है।

फ्लाइट के उड़ने के दौरान वायुमंडल में केवल 3% हल्के टर्बुलेंस होते है, लगभग 1% में मध्यम टर्बुलेंस होते है। प्रतिशत के कुछ दसवें हिस्से में किसी भी समय गंभीर टर्बुलेंस होते हैं।

पॉल विलियम्स, प्रोफेसर, वायुमंडलीय विज्ञान

एयर फ्लो में बाधा से टर्बुलेंस

टर्बुलेंस को एयर फ्लो या हवा के प्रवाह से समझा जा सकता है। किसी भी विमान को स्थिर उड़ने के लिए उसकी पंखुड़ी के ऊपर और नीचे स्थिर हवा के फ्लो की जरूरत होती है। कई बार मौसम या अन्य कारण से हवा के बहाव में अनियमितता आ जाती है। इससे स्थान विशेष में एयर पॉकेट बन जाते हैं। इन्हीं एयर पॉकेट की वजह से टर्बुलेंस होता है। जलवायु परिवर्तन के कारण जेट स्ट्रीम में अधिक अस्थिरता पैदा हो रही है और हवा की गति तेज हो रही है। हवा की स्थिरता के आधार पर टर्बुलेंस को हल्के, मध्यम, गंभीर कैटेगरी में बांटा जाता है।

हल्के टर्बुलेंस : इसमें प्लेन 1 मीटर तक ऊपर-नीचे होता है। कई बार तो हवाई यात्रियों को इसके बारे में पता भी नहीं चलता है।

मध्यम टर्बुलेंस : इसमें जहाज 3 से 6 मीटर तक ऊपर-नीचे होते हैं। इसमें यात्रा के दौरान हाथ में लिया ड्रिंक गिर सकता है।

गंभीर टर्बुलेंस : इसमें जहाज 30 मीटर तक ऊपर-नीचे होते हैं। सीट बेल्ट नहीं लगाने की स्थिति में पैसेंजर अपनी सीट से गिर सकते हैं।

क्या टर्बुलेंस से प्लेन क्रैश हो सकता है?

एक सवाल उठता है कि क्या टर्बुलेंस से प्लेन क्रैश हो सकता है। इसका जवाब है कि हां, ऐसा हो सकता है लेकिन इसकी आशंका बेहद कम होती है। आधुनिक समय में टेक्निक इतनी एडवांस हो गई है कि टर्बुलेंस की वजह से प्लेन क्रैश होने की आशंका काफी कम है। हालांकि, 60 के दशक में टर्बुलेंस की वजह से प्लेन क्रैश होने की घटनाएं भी सामने आ चुकी हैं। फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन के आंकड़ों के अनुसार, 2009 से 2021 तक, हर साल उड़ान भरने वाले लाखों लोगों में से टर्बुलेंस के कारण 30 यात्री और 116 चालक दल के सदस्य गंभीर रूप से घायल हुए। टर्बुलेंस के दौरान सीट बेल्ट नहीं लगे होने, सामान सिर के ऊपर गिरने, लोगों के लड़खड़ाने या केबिन के किनारों या खाने की गाड़ियों के लोगों से टकराने से चोटें लग सकती हैं।

विपक्ष ने मोदी पर बढ़त के तीन मौके गंवा दिए, प्रशांत किशोर ने बता दिया कहां पिछड़ गया I.N.D.I.A

लोकसभा चुनाव के सात चरण में से पांच चरण का मतदान पूरा हो चुका है। 4 जून को आने वाले नतीजों को लेकर कयासबाजी का दौर शुरू हो गया है। इस बीच विपक्षी धड़े इंडिया गठबंधन की रणनीति को लेकर आलोचना भी देखने को मिल रही है। चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर कमजोर रणनीति के लिए विपक्षी धड़े वाले गठबंधन की आलोचना कर रहे हैं।

नईदिल्ली : लोकसभा चुनाव में पांच चरण की वोटिंग पूरी हो चुकी है। अब सिर्फ दो चरण का मतदान बाकी है। ऐसे में लोग जीत-हार के साथ ही सीटों का अनुमान लगाने लगे हैं। इसके साथ ही आम लोगों से लेकर राजनीतिक विश्लेषकों में भी विपक्ष की रणनीति को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं। इस क्रम में एक नाम चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर का भी है। प्रशांत किशोर का मानना है कि विपक्ष ने बीजेपी पर जीत के लिए मौके को कई बार गंवाया हैं। इनमें से भी विपक्ष के पास तीन ऐसे मौके थे जहां वह बीजेपी को मात दे सकती थी। प्रशांत किशोर ने कहा कि राम मंदिर के उद्घाटन के बाद तो विपक्ष ने बिल्कुल हथियार ही डाल दिए थे। इसके बाद फरवरी में जब वे फिर से जागे, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। जब तक इंडिया गुट हरकत में आया, तब तक बहुत देर हो चुकी थी...भाजपा ने पहले ही अपनी खोई हुई जगह वापस पा ली थी।

एक टीवी चैनल से बातचीत में प्रशांत किशोर ने साफ कहा कि यह कोई पहली बार या आखिरी बार नहीं जब विपक्ष ने मौका खोया है। उन्होंने कहा कि मैं पहले भी कह चुका हूं कि भारत जैसे देश में अगर आप विपक्ष में हैं तो यह मौका आपके पास हर एक-दो साल में आता है। उन्होंने कहा कि मैं आकंड़ों के आधार पर बता चुका हूं कि हमारे यहां कांग्रेस नीत विपक्ष के पास तीन ऐसे मौके आए, जो 12 से 15 महीने का दौर रहा है जिसमें बीजेपी, मोदी या उनकी सरकार बैकफुट पर रही। हालांकि, विपक्ष उनको भुना नहीं पाया।

2015 में जब AAP जीती थी चुनाव

कांग्रेस, टीएमसी से लेकर जेडीयू के लिए रणनीति बना चुके प्रशांत किशोर ने कहा कि 2015 में जब दिल्ली में आम आदमी पार्टी ने चुनाव जीता था, उसी साल नवंबर में बिहार में बीजेपी को करारी शिकस्त मिली थी। उन्होंने कहा कि पूरा 2015 का साल और 2016 मई तक बंगाल, असम और तमिलनाडु के चुनाव हुए, उन 18 महीनों में बीजेपी को कहीं सफलता नहीं मिली। सिर्फ असम में बीजेपी गठबंधन की मदद से चुनाव में जीत हासिल करने में सफल रही थी। ऐसे में वो 15 महीने का समय विपक्ष और कांग्रेस के पास था। उस समय मोदी नए थे। उनकी कल्ट इमेज बननी शुरू हुई थी या नहीं शुरू हुई थी। उस समय सत्ता या व्यवस्था पर उतना नियंत्रण नहीं था। उस समय विपक्ष के पास बाउंस बैक करने का समय था। उस समय कांग्रेस और उनके साथियों ने उतना प्रयास नहीं किया।

नोटबंदी का बाद का समय

प्रशांत किशोर ने कहा कि दूसरा मौका नोटबंदी के बाद आया। उस समय आर्थिक निराशा कह लें या ग्रामीण निराशा कह लें, दिख रही थी। नोटबंदी के ठीक बाद बीजेपी को यूपी में जीत तो मिली लेकिन गुजरात के चुनाव से पहले पटेलों का आंदोलन शुरू हुआ, महाराष्ट्र में मराठा आंदोलन शुरू हुआ। पूरे देश में एक माहौल बनना शुरू हुआ था जो बीजेपी के लिए या पीएम मोदी के लिए आसान नहीं था। नवंबर 2017 में जो गुजरात के लिए जो चुनाव परिणाम आए थे, उसमें कांग्रेस ने अपने 20 साल में सबसे बेहतर प्रदर्शन किया था। बीजेपी मुश्किल से 15 सीट से गुजरात बचाने में सफल रही थी। उसके बाद कर्नाटक में उनकी हार हुई। इसके बाद बीजेपी लगातार तीन राज्यों छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और राजस्थान हारे। इसका मतलब है कि 2017 के मध्य से लेकर 2018 के अंत तक फिर 15 से 17 महीने का एक दौर था जब बीजेपी बैकफुट पर थी। उस समय विपक्ष के पास अवसर था कि वो चुनौती पेश कर सकते थे। उन्होंने वो मौका गंवा दिया।

कोविड की दूसरी लहर के बाद

प्रशांत किशोर ने कहा कि तीसरा मौका फिर आया जब कोविड की दूसरी लहर आई। बंगाल के विधानसभा चुनाव में नतीजे बीजेपी के पक्ष में नहीं रहे थे। कोविड की दूसरी लहर के दौरान सरकार एक तरह से बैकफुट पर थी। उस समय पता नहीं चल रहा था कि क्या होगा? 10 साल में पहली बार सर्वे में नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता में कमी आई थी। यह जून 2021 का समय था। बंगाल चुनाव हारने के बाद करीब एक साल का समय बीजेपी और मोदी के लिए चुनौती पूर्ण रहा था। विपक्ष ने फिर से वह अवसर गंवा दिया। प्रशांत किशोर ने कहा कि अंतिम मौका तब आया जब विपक्ष ने इंडिया गठबंधन बनाया। जून में विपक्ष एकजुट हुआ। देश में उनके समर्थकों में उत्साह आया कि इस बार एक मजबूत विपक्ष मिलकर शायद वो बीजेपी या मोदी को चुनौती देंगे। अगर वे ऐसा करने में सफल होते तो बीजेपी का नंबर 220-240 भी हो सकता था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023